मयंक भजनावली

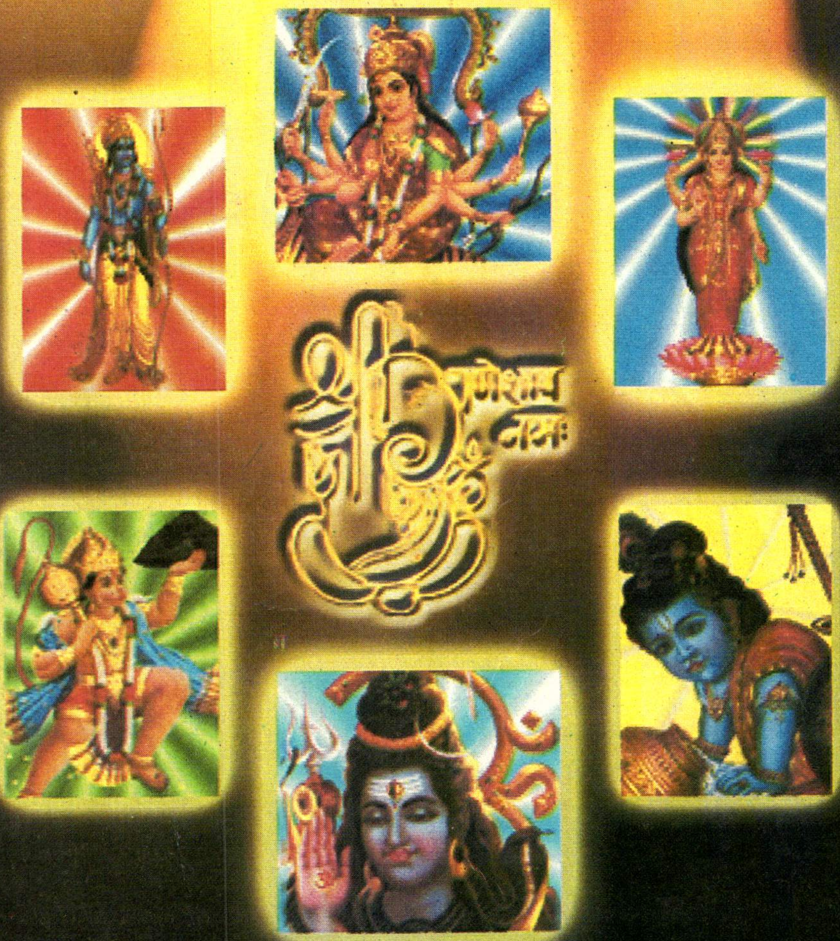

रचयिता
कृष्ण कुमार सिंह मयंक
संकलनः श्रीमती सरोज सिंह

मयंक भजनावली

रचयिता :

कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'

संकलन :

श्रीमती सरोज 'मयंक'

पुस्तक का नाम	:	मयंक भजनावली
रचयिता	:	कृष्ण कुमार सिंह 'मयंक'
प्रकाशन का वर्ष	:	2001
प्रतियां	:	500
मूल्य	:	रु. 21.00

(सभी अधिकार रचयिता के पास सुरक्षित)

वितरक :
श्रीमती सरोज मयंक
3/193, विशाल खण्ड, गोमती नगर
लखनऊ

आत्मकथ्य

प्रिय पाठको,

मेरे गीत, ग़ज़ल, नज़्म, कविता आदि के संग्रह आप तक पहुंच चुके हैं। मेरे प्रशंसकों ने समय-समय पर मुझे इस बात के लिए प्रेरित किया कि मैं भजन भी लिखूं और उनका संग्रह प्रकाशित करवाऊं। वर्तमान समय में धर्म के प्रति कम होती आस्था एवं भौतिकीकरण की ओर मानव के झुकाव को ध्यान में रखते हुए मैने यह तय किया कि भजन इस प्रकार के लिखे जायें कि वो सीधी साधी एवं लोक भाषा में हों तथा उनको लोग गा कर प्रभु की स्तुति कर सकें और उनमें धर्म के प्रति आस्था को बढ़ावा मिले।

अतः मैने ब्रजभाषा, अवधी तथा खड़ी बोली को प्रयोग में ला कर इन भजनों की रचना की। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि ये भजन जन मानस तक पहुंच कर न केवल आनन्द की अनुभूति प्रदान करेंगे बल्कि

लोगों में धर्म के प्रति कम होती हुई आस्था को पुनः स्थापित कर सकेंगे। इनमें से बहुत से भजन कई लोक गायकों ने गाये हैं जिनको बहुत पसन्द किया गया है।

इन भजनों को संकलन एवं क्रमबद्धता प्रदान करने में मेरी अर्द्धांगिनी सरोज मयंक का मुझे बहुत सहयोग मिला है जिसके लिए मैं उनका बहुत आभारी हूं। भजन विभिन्न इष्ट देवों को समर्पित हैं तथा पाठकों से अनुरोध है कि वे इन्हें पढ़कर एवं गा कर मुझे अपने बहुमूल्य सुझावों से अवगत करायें।

दूरभाष : 200845 (का.)
204091 (नि.)

के. के. सिंह 'मयंक'
मुख्य दावा अधिकारी
पूर्वोत्तर रेलवे, गोरखपुर

अनुक्रमणिका

भजन तालिका		पृष्ठ सं०
गजानन नमन करो स्वीकार	..	1-2
भजिए गौरी पुत्र गजानन	..	3
हे गणेश हे सिद्धि विनायक	..	4-5
माँ शारदे वर दे	..	7
शारदे नमन करो स्वीकार	..	8-9
हमारे कान्हा	..	11-12
कृष्ण कन्हैया	..	13-14
गिरधारी मुरली वाला	..	15-16
माधव कृष्ण मुरारी	..	17-18
कान्हा जू	..	19
पत राखो कृष्ण कन्हैया	..	20-21
मथुरा की गुजरिया	..	22
कन्हाई से होली खेलेंगे	..	23-24
बाँसुरिया बाजे जमुना के तीर	..	25-26
बृजलाल जी	..	27-28
दरस बिन बीती जाये उमरिया	..	29-30
गोवर्धन गिरधारी	..	31-32
बंसी मधुर बजावें	..	33-34
माधव कृष्ण कन्हैया	..	35-36
गिरधर कृष्ण मुरारी	..	37-38
कान्हा नन्द कुमार	..	39-40
जग के पालनहार	..	41-42
श्री राम चन्द्राय नमः	..	43-44
कौसलेश रघुनन्दन	..	45-46
दशरथ नन्दन राम लला	..	47-48
जय-जय सियाराम	..	49
राम सियाराम	..	50
कृपा करो रघुबीर	..	51-52
सियापति रघुराई	..	53-54
श्री हनुमन्ताय नमः	..	55-56
महावीर हनुमान	..	57-58

भजन तालिका		*पृष्ठ सं०*
बजरंग बली	..	59-60
ओउम नम: शिवाय	..	61-62
महादेव शिव भोले	..	63-64
नीलकण्ठ कैलाश निवासी	..	65-66
भोले भण्डारी	..	67-68
भोले शंकर जी	..	69-70
हर-हर महादेव शिव शंकर	..	71-72
हे अभ्यंकर	..	73-74
ओउम नम: शिवाय	..	75-76
हे शिव शंकर ओंकारेश्वर	..	77-78
श्री सत्यदेवाय नम:	..	79
मन को धोलो	..	80
भक्तों को प्यार करो	..	81-82
जगदीश हरे	..	83-84
चरणों में झुक जाने दो	..	85-86
सत्यदेव भगवान	..	87-88
जय माँ शेरावाली	..	89-90
नाचे रे लांगुरिया	..	91-92
शेरॉ वाली की जय बोलो	..	93-94
ऐ दुरगे माँ शेरॉ वाली	..	95-96
शेरॉ वाली के दरबार में	..	97-98
माता ने बुलाया है दरबार में	..	99-100
जयकारा शेरॉ वाली का	..	101-102
मैय्या आ जाना	..	103-104
बोलो साईं साईं राम	..	105
साईं नाम बड़ा हितकारी	..	106
गुरू जी नमन करो स्वीकार	..	107-108
जग के स्वामी	..	109
गुरू जी सुनिए अरज हमारी	..	110
गुरू की महिमा	..	111-112
गुरू जी के चरणों में	..	113-114

ओउम् जय श्री गणेशाय नमः

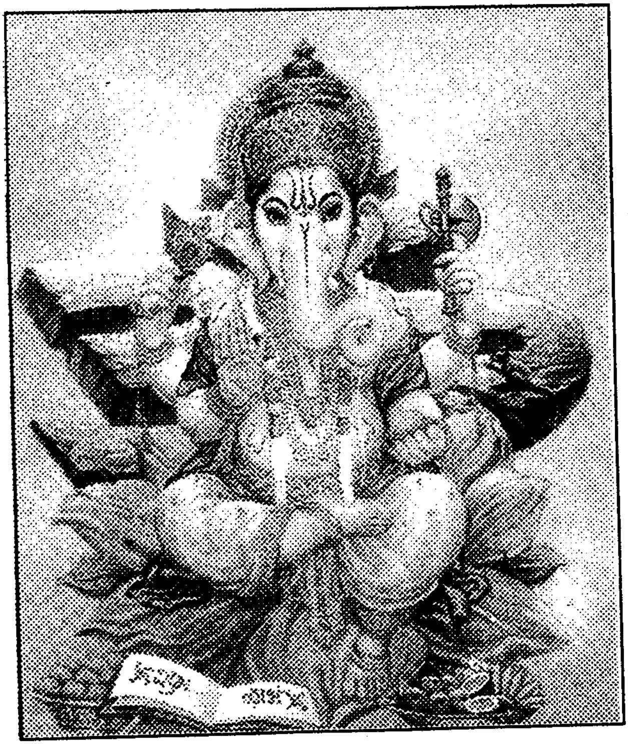

श्री गणेश

गजानन नमन करो स्वीकार

गजानन नमन करो स्वीकार ॥ गजानन ॥
हे गौरी शंकर सुत भव से नैय्या कर दो पार ॥
नमन करो स्वीकार गजानन नमन करो स्वीकार ॥

लम्बोदर गणपति नर जो भी निस दिन तुमको ध्यावे ।
कष्टों से छुटकारा पावे, मन वांछित फल पावे ॥
देव असुर गावें सब तुम्हरी लीला अपरम्पार ॥
नमन करो स्वीकार गजानन नमन करो स्वीकार ॥

माता की आज्ञा पालन में, तुमने शीश कटाया ।
शंकर जी ने तुम्हरे सर पर, गज का शीश लगाया ॥
हे गणेश गौरी के नन्दन जग के पालनहार ॥
नमन करो स्वीकार गजानन नमन करो स्वीकार ॥

कोई भी शुभ कार्य करें, पर पहले गणपति भजिए ।
कार्य सफल होगा निश्चय ही, हर संशय को तजिए ॥
श्री गणेश का वन्दन है हर इक सुख का आधार ॥
नमन करो स्वीकार गजानन नमन करो स्वीकार ॥

मोदक प्रिय तुम मंगल दाता, कृपा करो हे स्वामी ।
दरस दिखा दो मुझ 'मयंक' को भी हे अन्तर्यामी ॥
श्री चरणों में शीश झुकाता हूँ मैं बारम्बार ॥
नमन करो स्वीकार गजानन नमन करो स्वीकार ॥

भजिए गौरी पुत्र गजानन

भजिए गौरी पुत्र गजानन ।
मंगलकारी मूरत जिनकी सूरत है मनभावन,
भजिए गौरी पुत्र गजानन ।।

सर्वप्रथम कर इनकी पूजा, फिर भजना कोई सुर दूजा
इनको भज लें लगा रहेगा वरना आवन जावन
भजिए गौरी पुत्र गजानन ।।

ये सबके दु:ख दर्द मिटाते, इनके मन को मोदक भाते
बारहों मास भजें बस इनको सर्दी हो या सावन
भजिए गौरी पुत्र गजानन ।।

इनकी लीला है अति न्यारी, करते हैं मूषक की सवारी
भवसागर से तरना हो तो, थाम लो इनका दामन
भजिए गौरी पुत्र गजानन ।।

रिद्धि-सिद्धि के स्वामी हैं ये, भक्तो अन्तर्यामी हैं ये
सिद्धि विनायक गौरी नन्दन का करिए अभिवादन
भजिए गौरी पुत्र गजानन ।।

हे गणेश हे सिद्धि विनायक

हे गणेश हे सिद्धि विनायक ।

गौरी सुत असुरो के हंता ।
लम्बोदर गणेश भगवन्ता ।।
सबके बिगड़े काज सवांरो ।
शंकर नन्दन हे इक दन्ता ।।
सब देवों में सबसे लायक ।
हे गणेश हे सिद्धि विनायक ।

मातृ-भक्त हे मंगल दाता ।
हो चारों वेदों के ज्ञाता ।।
कार्तिकेय के भ्राता हो तुम ।
तुमको मोदक बहुत सुहाता ।।
हे दुख भंजन हे सुख दायक ।
हे गणेश हे सिद्धि विनायक ।

वीणा-वादिनि माँ शारदे

शंकर सुत गौरी के नन्दन ।
प्रथम करे जो तुम्हरो वन्दन ।।
तुम्हरी पूजा से कट जाते ।
आवन-जावन के सब बन्धन ।।
तुम सम दूजा नहीं सहायक ।
हे गणेश हे सिद्धि विनायक ।

हर प्राणी पर दया तुम्हारी ।
मूषक की तुम करो सवारी ।।
मैं 'मयंक', गन्धर्व, देवता ।
नाथ सभी तुम पर बलिहारी ।।
तुम सारे देवों के नायक ।
हे गणेश हे सिद्धि विनायक ।

माँ शारदे वर दे

माता शारदे वर दे ।
मन के तिमिर मिटा दे माता, ऐसी ज्योति जला दे माता ।
विषय विकार मिटाने वाली, पावन गंग बहा दे माता ।।
हंस वाहिनी, वीणा वादिन, मन निर्मल कर दे ।।
माता शारदे वर दे ।

तू साक्षात ज्ञान की मूरत, ममता और प्यार की सूरत ।
इस भौतिक नश्वर धरती को, माता तेरी बहुत ज़रूरत ।।
हर विषादमय प्राणी पर निज, वरद हस्त धर दे ।।
माता शारदे वर दे ।

लोभ मोह के बादल छाये, घृणा, दम्भ हैं पैर जमाये ।
घोर रसातल में जाने से, इस धरती को कौन बचाये ।।
खोल ज्ञान के चक्षु, प्रेम के ढाई अक्षर दे ।।
माता शारदे वर दे ।

जो सुर ताल में मेल करा दे, ऐसा इक संगीत सुना दे ।
तन और मन दोनो झंकृत हों, वीणा पर वो तान बजा दे ।।
माँ 'मयंक' के हृदय नेह की, स्वर लहरी भर दे ।।
माता शारदे वर दे ।

शारदे नमन करो स्वीकार

वीणा वादिनि झंकृत कर दो मन वीणा के तार,
शारदे नमन करो स्वीकार ।
हंस वाहिनी कर दो हम पर बस इतना उपकार,
शारदे नमन करो स्वीकार ।।

मन के तिमिर मिटा कर माता,
भर दे तू उजियारा ।
उजियारा ऐसा जिससे हो,
ज्योतिर्मय जग सारा ।।
भटक रहा है अंधियारे में,
ये सारा संसार ।
शारदे नमन करो स्वीकार ।।

शुभ्र ज्योत्सना बन कर माता,
ज्ञान की ज्योति जला दो ।
इक साहित्य कला की ऐसी,
सुरलहरी लहरा दो ।।
ज्ञान कलश से छलका दो माँ,

अमृत रस की धार ।
शारदे नमन करो स्वीकार ॥
कमल आसिनी जीवन पथ,
कर दो इतना ज्योतिर्मय ।
अन्धराकार में पलने वाला,
मिट जाए हर संशय ॥
इतनी विनती करते हैं हम
तुमसे बारम्बार,
शारदे नमन करो स्वीकार ॥

खड़े हुए हैं द्वार तुम्हारे,
कब से देते दस्तक ।
हमको अपने चरणों में माँ,
रख लेने दो मस्तक
प्यार के ढाई अक्षर देकर
कर दो माँ उद्धार,
शारदे नमन करो स्वीकार ॥

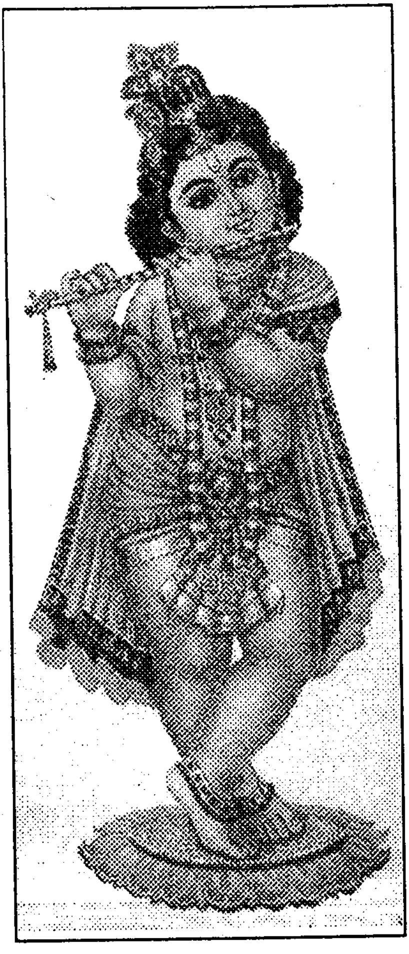

श्री कृष्ण वासुदेव

हमारे कान्हा

नटवर लाल हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

मुरली धर पीताम्बर धारी, मोर मुकुट वारे बनवारी ।
तुमको पूजें सब नर-नारी, लीला बरन न जाए तुम्हारी ॥
हर अधर्म और हर असत्य के, है बस काल हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

जब-जब भीड़ पड़ी भक्तों पर, दिया सहारा तुमने आकर ।
कृष्ण अनन्त अनादि अगोचर, बलदाऊ के भ्रात सहोदर ॥
भक्तों के संग रास रचावैं, भक्त कृपाल, हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

बृजवासिन संग खेलें होरी, लिए पिचकरा और कमोरी ।
सखियन संग करें बरजोरी, प्यार सों रंग दई राधा गोरी ॥
हंस-हंस कर सबके मुख मलते, रंग गुलाल हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

गीता का उपदेश सुनाया, पाण्डव सुत का मोह मिटाया ।
पांचाली का चीर बढ़ाया, रण में रूप विराट दिखाया ॥
कर्म का मार्ग दिखाकर काटें, माया जाल हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

जनम लेत ही खुल गयो तारो, तुमहि पूतना बध करि डारो ।
उंगली पे गोबर्धन धारो, राक्षस मामा कंस पछारो ॥
बचपन में योद्धाओं जैसे, करत कमाल हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

मथुराधीश द्वारिका स्वामी हे, हे अवतारी अंतरयामी ।
सारा जग तुम्हरो अनुगामी, शरण 'मयंक' पड़ा खल कामी ॥
छोड़ के तुमको किसको बतायें अपना हाल हमारे कान्हा ।
दीन दयाल हमारे कान्हा ॥

कृष्ण कन्हैया

मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया ।
सागर में हूँ मैं और भंवर में मेरी नैया ।।

जीवन के अन्धेरे में मेरे कर दे उजाला ।
दे दरस हमें भी ओ कभी नन्द के लाला ।।
बंसी की मधुर तान बजा बंसी बजैया ।
मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया ।।

सखियों के संग तुमने महा रास रचाया ।
विपदा में पड़ी द्रौपदी का चीर बढ़ाया ।।
ऐ मोर मुकुट वारे ओ गैयों के चरैया ।
मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया ।।

अवतार लिया आपने मामा की जेल में ।
मारा था कंस आपने बस खेल-खेल में ।।
सोलह कला प्रवीन ओ काली के नथैया ।
मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया ।।

गीता में दिया था जो वचन आके निभादे ।
भटकी हुई दुनिया को सही राह दिखादे ।।
सुन टेर मुझ 'मयंक' की बलराम के भैया ।
मुझ पर भी करम करना ज़रा कृष्ण कन्हैया ।।

गिरधारी मुरली वाला

बांसुरिया मधुर बजाए है, गिरधारी मुरली वाला ।
तन मन की सुध बिसराए है, गिरधारी मुरली वाला ॥

वो सबका रखवाला है, जो गोबर्धन गिरधारी ।
माखन चोरी करके खावै उसकी लीला न्यारी ॥
राधा संग रास रचाए है, गिरधारी मुरली वाला ।
तन मन की सुध बिसराए है, गिरधारी मुरली वाला ॥

अगम अगोचर नारायण तीनों लोको के स्वामी ।
तेरी लीला क्या जानूं मैं घोर कुटिल खल कामी ॥
ग्वालन संग धेनु चराए है, गिरधारी मुरली वाला ।
तन मन की सुध बिसराए है, गिरधारी मुरली वाला ॥

तुमने मुष्ठी के प्रहार से कंस को मार गिराया ।
त्याग के दुर्योधन के मेवे साग विदुर घर खाया ।।
भक्तों का मान बढ़ाये है, गिरधारी मुरली वाला ।
तन मन की सुध बिसराए है, गिरधारी मुरली वाला ।।

सब सारों का एक सार हमने तो बस ये जाना ।
सब देवों को छोड़ के केवल भज लो कान्हा-कान्हा ।।
वो सबकी पार लगाये है, गिरधारी मुरली वाला ।
तन मन की सुध बिसराए है, गिरधारी मुरली वाला ।।

देव सहाय न हो कोई तो भजिए कृष्ण गोपाला ।
जिसके तन पे पीताम्बर है गल बैजन्ती माला ।।
ये रूप 'मयंक' को भाये है, गिरधारी मुरली वाला ।
तन मन की सुध बिसराए है, गिरधारी मुरली वाला ।।

माधव कृष्ण मुरारी

हे माधव कृष्ण मुरारी ।
दुष्टों के संहारक कान्हा भक्तों के हितकारी ॥

बालापन में बलदाऊ संग असुर कई संहारे ।
मामा कंस को मार के बृज वासिन के भाग्य सवांरे ।
तुम्हरी लीला तुम ही जानो जो है सबसे न्यारी ।
हे माधव कृष्ण मुरारी ।

जब-जब भीर पड़ी संतन पै, प्रभु तुम भए सहायी ।
द्रुपद सुता की चीर बढ़ा कर तुमने लाज बचायी ॥
मै भी शरणागत हूँ तुम्हरो कृपा करो गिरधारी ।
हे माधव कृष्ण मुरारी ।

नन्द यशोदा के सुत बनके उनका मान बढ़ाया ।
माखन मिश्री लूट के तुमने सबमें नेह लुटाया ॥
कैसे तुम्हें भुलाए कान्हा बृज के सब नर-नारी ।
हे माधव कृष्ण मुरारी ।

कृपा करो फिर एक बार तुम हमको दरस दिखाओ ।
एक बार फिर बृज में आकर मुरली मधुर बजाओ ॥
ये 'मयंक' भी आन पड़ा है कान्हा शरण तुम्हारी ।
हे माधव कृष्ण मुरारी ।

कान्हा जू

हे रास रचैय्या कान्हा जू ।
गैय्यों के चरैय्या कान्हा जू ॥

गीता के उपदेश से सबको, कर्म का मार्ग दिखावैं ॥
कुरुक्षेत्र में श्री अर्जुन को रूप विराट दिखावैं ॥
बंसी के बजैय्या कान्हा जू, हे रास रचैय्या कान्हा जू ॥

बालापन में पनघट पे राधा की मटकी फोड़ी ॥
लेकिन उनके संग में तुमने डोर नेह की जोड़ी ॥
माखन के चुरैय्या कान्हा जू, हे रास रचैय्या कान्हा जू ॥

हे रणछोड़ द्वारका वाले, तुम्हरी महिमा न्यारी ॥
जग के पालक बने सारथी जाने दुनिया सारी ॥
गोधन के उठैय्या कान्हा जू, हे रास रचैय्या कान्हा जू ॥

पापाचार बढ़े धरती पे, मामा कंस पछारौ ॥
मुझ 'मयंक' के भी हे गिरधर आकर कष्ट निवारो ॥
दाऊ के भैय्या कान्हा जू, हे रास रचैय्या कान्हा जू ॥

पत राखो कृष्ण कन्हैया

पत राखो कृष्ण कन्हैया
बाबा नन्द हैं पिता तुम्हारे जसुमति तुम्हरी मैय्या ॥
पत राखो..................................॥

इन्द्र प्रकोप बढ़्यो बरखा से, बृजवासी अकुलाए ॥
उंगली पर पर्वत धारण कर, तुम गिरधर कहलाए ॥
कुंज गलिन में रास रचावें, कर-कर ता ता थैय्या ॥
पत राखो..................................॥

जो तुम्हरे द्वारे पर आकर, निस दिन शीश झुकाते ॥
मन वांछित फल पाते है, भव सागर तर जाते ॥
मै भी शरण पड़ा हूं स्वामी पार लगा दो नैय्या ॥
पत राखो..................................॥

ग्वाल बाल और सखा साथ ले कान्हा धेनु चरावैं ॥
बैठ कदम की डार कन्हैया बंसी मधुर बजावैं ॥
जिसकी तान पै झूमें तरुवर, ग्वाल बाल और गैय्या ॥
पत राखो..................................॥

जूए में जब पाँच पांडवों ने पांचाली हारी ॥
तुमने चीर बढ़ाकर उसका, गिरिधर विपदा टारी ॥
मुझ 'मयंक' पर भी किरपा कर, ओ दाऊ के भैय्या ॥
पत राखो कृष्ण कन्हैया ।

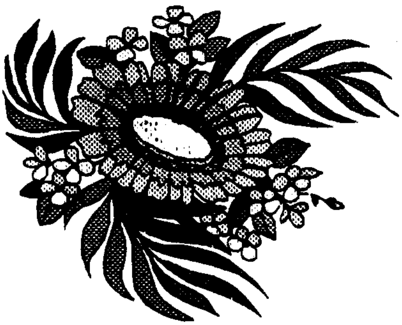

मथुरा की गुजरिया

अपने कान्हा से प्रीत लगाय रही रे, मथुरा की गुजरिया ।
मंद-मंद मुस्काय रही रे, मथुरा की गुजरिया ॥

वो देखो वृषभान दुलारी, जो कान्हा को है अति प्यारी ॥
सोच रही है दरस दिखा कर, प्यास बुझायेंगे बनवारी ॥
ये सोच-सोच इतराय रही रे, मथुरा की गुजरिया ॥
मंद मंद...................................॥

कान्हा जब खेलेंगे होली, राधा सोच रही है भोली ॥
तन मन सारे भीग उठेंगे, और भीगेगी चूनर चोली ॥
रंग गुलाल उड़ाय रही रे, मथुरा की गुजरिया ॥
मंद मंद...................................॥

कान्हा जब मथुरा जायेंगे, हमको याद बहुत आयेंगे ॥
सोच रही प्यासे नैनों की, कैसे प्यास बुझा पायेंगे ॥
अँखियों से नीर बहाय रही रे, मथुरा की गुजरिया ॥
मंद मंद मुस्काय रही रे मथुरा की गुजरिया ॥

कन्हाई से होली खेलेंगे

होली आई है, कृष्ण कन्हाई से होली खेलेंगे ।
बृज के हर लोग लुगाई से होली खेलेंगे ॥

कान्हा भर लाए पिचकारी, राधा पै खाली कर डारी ॥
देख के ऐसा दृश्य सुहाना, खुश भए गोकुल के नर-नारी ॥
दाऊ भाई के ऐसे भाई से होली खेलेंगे ॥
होली आई है..॥

करत हास परिहास ठिठोली, आई जब होली की टोली ॥
रंग में सबके तन मन भीगे, भीगे चूनर लहंगा चोली ॥
नन्द बाबा, जसोदा माई से होली खेलेंगे ॥
होली आई है..॥

टोली आई बरसाने की, रितु आई फगुआ गाने की ॥

ढोलक, झाँझ, मंजीरा लेकर, झूम झूम के हरसाने की ॥

हम भी मन की उसी गहराई से होली खेलेंगे ॥

होली आई है.................................॥

प्यार के रंग राधा ने डारे, भीग गये कान्हा मतवारे ॥

देख के ऐसा दृश्य अनोखा, देव करें सब जय जय कारे ॥

जिन पै मस्ती हो, ऐसी छाई से, होली खेलेंगे ॥

होली आई है कृष्ण कन्हाई से होली खेलेंगे ॥

बाँसुरिया बाजे जमुना के तीर

बाँसुरिया बाजे तोरी कान्हा जमुना के तीर ।
तान सुरीली व्यथित हृदय की हर हर लेवत पीर ।।
बाँसुरिया...................................।।

कोई कहे तान मुरली की, भक्ति भाव उपजावै ।।
और किसी को तान ज्ञान की राह का बोध करावै ।।
सुनने में लागे अति सादी, घाव करे गम्भीर ।।
बाँसुरिया...................................।।

बाजत बाजत रुक जावै तो, गहन व्यथा उपजावै ।।
सारा जग निष्प्राण लगे और कछु नही मन को भावै ।।
पुनि पुनि इसकी तान सुनन को मनवा होत अधीर ।।
बाँसुरिया...................................।।

रास रचावै धेनु चरावै, मुरली मधुर बजावै ॥
गोपी धेनु, सखा, माँ जसुमति, धुनि सुनि धावत आवै ॥
मन में उठत हिलोर, कहे कल कल जमुना का नीर ॥
बाँसुरिया..................................॥

सुन कर तान करे 'मयंक' मन, पास तुम्हारे आऊं ॥
पर माया का जाल प्रभु जी, केहि विधि तोड़ न पाऊं ॥
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह की पाँव पड़ी जंजीर ॥
बाँसुरिया बाजे तोरी कान्हा जमुना जी के तीर ॥

बृज लाल जी

याद आवै मोहे बृजलाला जी

माधव मोहन कृष्ण मुरारी दीन दयाला जी ।

याद आवै.. ॥

याद सतावै गोकुल की, जित कान्हा धेनु चरावै ।

खेल खेल में नथै कालिया, बंसी मधुर बजावै ॥

मधुबन धेनु चराने वाला गोपाला जी ।

याद आवै.. ॥

याद आवै गोकुल की ललना, वो वृषभान दुलारी ।

जो कान्हा की बाल सखा है, और जग की महतारी ॥

याद आवै वो रूप मनोहर बंसी वाला जी ।

याद आवै.. ॥

बन्दीगृह में अवतारे प्रभु अनुपम तुम्हरी माया ।
धन्य भये आकाश धरा और देवों ने गुण गाया ॥
टूट गई बेड़ी द्वारे का, टूटा ताला जी ।
याद आवै................................ ॥

याद आवै वो फाग महीना, बरसाने की होरी ।
जहाँ श्याम रंग में रंग डारी श्याम ने राधा गोरी ॥
याद आवै माता जिसने कान्हा को पाला जी ।
याद आवै................................ ॥

याद आवै वो मस्तक जिसपे मोर मुकुट नित सोहे ।
पैजनिया जिनके पावों की सबके मन को मोहे ॥
कुंज गलिन में रसिया रास रचाने वाला जी ।
याद आवै मोहे बृजलाला जी ॥

दरस बिन बीती जाये उमरिया

दरस बिन बीती जाये उमरिया ।
कब आओगे दरसन देने ओ मेरे साँवरिया ॥
दरस बिन................................ ॥

कब से बैठा हूँ राहों में तेरी नैन बिछाये ।
रीत गई अंसुअन से अँखियां नैन मोरे पथराए ॥
खुले हुए रक्खे हैं मैंने मन के द्वार किवरिया ।
दरस बिन................................ ॥

चादर जो मैं लेकर आया झीनी झीनी कोरी ।
पापों के रंग से रंग डारी सुध बिसराई तोरी ॥
मेरी कोरी चूनर प्रभु जी बन गई स्याह चदरिया ।
दरस बिन................................ ॥

तेरे प्यार में पागल होकर मैं हो गई दीवाना ।
तुम जो अंग लगा लो मुझको मै हो जाँऊ सयाना ।।
सारी दुनिया देत उलहना मुझको बीच बजरिया ।
दरस बिन.................................... ।।

जब से ख़बर लगी आवन की फूल उठी फुलवारी ।
चटकन लागी मन की कलियां महक उठी हर क्यारी ।।
महक उठे आँगन ओसारे, महक उट्ठी ओसरिया ।
दरस बिन.................................... ।।

बचपन गया जवानी बीती, सिर पे बुढ़ापा आया ।
लेकिन माया के बन्धन से निकल नहीं मैं पाया ।।
कहत 'मयंक' दिखाओ अपने नगर की मुझे डगरिया ।
दरस बिन बीती जाए उमरिया ।।

गोवर्धन गिरधारी

पत राखो आप हमारी ओ गोवर्धन गिरधारी ।
हम आये शरन तुम्हारी ओ गोवर्धन गिरधारी ।।

ओ नटवर नागर छैय्या, ओ बलदाऊ के भैय्या ।
सब तुम्हरी ओर निहारें, बृजवासी बछरा गैय्या ।।
तुम हो सबके हितकारी, ओ गोवर्धन गिरधारी...।।

जसुमति मैय्या के लाला, करुणानिधि दीनदयाला ।
कटि में बाँधे पीताम्बर, गल में बैजन्ती माला ।।
सब कष्ट हरो बनवारी, ओ गोवर्धन गिरधारी..।।

जब इन्द्र ने क्रोध दिखाया, ब्रज में पानी बरसाया ।
उंगली पे गिर को उठाकर, भक्तों का मान बढ़ाया ।।
तुम्हरी लीला अति न्यारी, ओ गोवर्धन गिरधारी...।।

ओ दुष्टों के संहारक, भक्तों के कष्ट निवारक ।
जीवन नैय्या के तारक, ओ मोर मुकुट के धारक ॥
मम कष्ट हरो बनवारी, ओ गोवर्धन गिरधारी.......॥

ओ जगत पिता जग पालक, सारी सृष्टि के चालक ।
सब गाते भजन तुम्हरे, सब युवा, वृद्ध और बालक ॥
है शरण 'मयंक' मुरारी, ओ गोवर्धन गिरधारी ॥

बंसी मधुर बजावें

कन्हैया म्हारौ बंसी मधुर बजावै ।
ग्वाल बाल गैय्या बछरन की, सुधबुध सब बिसरावै ॥
कन्हैया देखो बंसी मधुर बजावै.................... ॥

तान बिना सब सूना लागे, मन अँधियारा छावै ।
तान सुनत हर मन हरसावै, उजियारा हो जावै ॥
कन्हैया म्हारौ बंसी मधुर बजावै.................... ॥

बंसी की धुन सुन सब, खोए बृज के ये नर नारी ।
सखा, मनसुखा खोए, खोए भ्रात, पिता, महतारी ॥
बंसी की धुन पर गोपिन, संग नाचे, रास रचावै ।
कन्हैया म्हारौ बंसी मधुर बजावै.................... ॥

राधा की सौतन भई, ये कान्हा का साथ न छोड़े ।
रूठीं रूठीं राधा जू के; हाथ कन्हैया जोड़े ।।
देख के मुरली मुरलीधर की राधा बहुत खिजावै ।
कन्हैया म्हारौ बंसी मधुर बजावै...................... ।।

ये मुरली की तान निगोड़ी, मोरी नींद चुरावै ।
कान्हा के ओठों से लग के गुस्सा बहुत दिलावै ।।
कछु न करि सके राधा रानी, मन मसोस रह जावै ।
कन्हैया म्हारौ बंसी मधुर बजावै...................... ।।

ग्वाल बाल खेलें मधुबन में, कान्हा धेनु चरावैं ।
घर में माखन चोरी करिके माँ को बहुत खिजावैं ।।
देख के दृश्य 'मयंक' ऐसा निज जीवन सफल बनावैं ।
कन्हैया म्हारौ बंसी मधुर बजावै ।।

माधव कृष्ण कन्हैया

ओ केशव माधव कृष्ण कन्हैया ।
नन्द तुम्हारे पिताश्री और जसुमति तुम्हरी मैय्या ।।
ओ केशव माधव..........................।।

जमुना तट पर गोपिन के संग कान्हा रास रचावें ।
सखा मनसुखा और सुदामा संग वो धेनु चरावें ।।
उनकी मुरली की तानों पर नाचें ग्वाले गैय्या ।
ओ केशव माधव..........................।।

तुमने असुर पूतना मारी, मामा कंस पछारौ ।
मुझको भी भवसागर से, ऐ गिरधर पार उतारौ ।।
तुमने हर इक शरणागत की पार लगाई नैय्या ।
ओ केशव माधव..........................।।

भक्ति ज्ञान के अन्तर को प्रभु मै कैसे पहचानूं ।
तुम बिन जीवन सूना लागे बस इतना मैं जानूं ॥
दर्शन लाभ करा दो मुझको ओ दाऊ के भैय्या ॥
ओ केशव माधव..,......................॥

गीता के उपदेश से तुमने कर्म की राह दिखाई ।
बचपन में माखन चोरी कर प्रीत की रीत सिखाई ॥
रास रचाया जगत नचाया दे दे ता ता थैय्या ।
ओ केशव माधव..............................॥

जितने असुर पछारे तुमने, वो सब स्वर्ग सिधारे ।
सदना कसाई जैसे पापी तुमने पार उतारे ॥
मुझ 'मयंक' की नैय्या के भी कान्हा बनो खिवैय्या ॥
ओ केशव माधव कृष्ण कन्हैया......................॥

गिरधर कृष्ण मुरारी

सृष्टि ऋणी है तुम्हरी सारी ।
जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ।।

हुए अवतरित बन्दीघर में, पहरेदार सोये पल भर में ।
वासुदेव पितु उहें उठाये, गोकुल नन्द बाबा घर लाये ।।
खुश भये गोकुल के नर नारी, जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ।।

अत्याचार बढ़े असुरों के, खोये सब सम्मान बड़ों के ।
सच्चाई की हार हुई थी, पाप की सीमा पार हुई थी ।।
तब आये बन कर अवतारी, जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ।।

राधा के संग रास रचावें, ग्वाल बाल संग धेनु चरावें ।
रुष्ट इन्द्र जब जल बरसावें, गोवर्धन उंगली पे उठावें ।।
तुम्हरी महिमा है अति भारी, जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ।।

पापी मामा कंस पछारो, असुर पूतना वध करि डारो ।
श्री दामा के चावल खाये, दीन के सोये भाग्य जगाये ॥
धन्य धन्य पीताम्बर धारी, जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ॥

हे रणछोड़ द्वारका वारे, रुक्मिण सत भामा के प्यारे ।
केशव, माधव, कृष्ण, मुरारे कितने ही हैं नाम तुम्हारे ॥
टेर सुनो मेरी गिरधारी, जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ॥

निज भक्तों की लाज बचावें, द्रुपद सुता का चीर बढ़ावें ।
शान्तिदूत बन कर तुम आये,'मयंक' कौरव समझ न पाये ॥
ध्वस्त हो गये पापाचारी, जय जय गिरधर कृष्ण मुरारी ॥

कान्हा नन्द कुमार

मुरारी कान्हा केशव नन्द कुमार ।
हे जसुमति के लाल, हमारी नैय्या कर दो पार ।।
मुरारी कान्हा केशव नन्द कुमार ।।

गीता का उपदेश, दिया तुमने जब कृष्ण मुरारी ।
अर्जुन के हिय में जागी, तुमने हर दुविधा टारी ।।
रूप विराट दिखाकर तुमने चकित किया संसार ।।
मुरारी कान्हा.............................. ।।

गीता के उपदेश यही, बस हमको हैं बतलाते ।
पापाचार बढ़े धरती पर, तब तब हो तुम आते ।।
धर्म की रक्षा की खातिर, प्रभु फिर ले लो अवतार ।।
मुरारी कान्हा.............................. ।।

बन्दीगृह में जन्म लियो, तब टूट गये सब ताले ।
ज्ञान भक्ति के फैल गये फिर चारों और उजाले ॥
टूट गई सारी जंजीरें, सो गये पहरेदार ॥
मुरारी कान्हा............................... ॥

पापाचार बढ़े हैं इतने, पारावार नहीं है ।
कैसे तुम्हरे भक्त बचे, कोई उपचार नहीं है ॥
अपने कृष्ण कन्हैया को, फिर धरती रही पुकार ॥
मुरारी कान्हा............................... ॥

निर्गुण और सगुण का अन्तर, जब तुमने समझाया ।
वृन्दावन की कुंज गलिन में, तुमने रास रचाया ॥
मुझ 'मयंक' को राह दिखाने, फिर आओ इक बार ॥
मुरारी कान्हा............................... ॥

जग के पालनहार

जग के पालनहार कन्हैया ।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

तुम हो सारे जग के स्वामी ।
अगम, अगोचर, अंतरयामी ।।
आपके दम से ही चलता है ।
जग का कारोबार कन्हैया ।।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

धन्य-धन्य बृज की ये धरती ।
संतों का सम्मान है करती ।।
इसी धरा पर जग के हित में ।
तुम लीनो अवतार कन्हैया ।।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

आप कृपालु दयावान हैं ।
निज भक्तों पै मेहरबान हैं ।।
जग में खुशियां बांट-बांट कर ।
करते हैं उपकार कन्हैया ।।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

तुम दाता करतार तुम्ही हो ।
जीवन के आधार तुम्ही हो ।।
दम से तुम्हरे ही चलता है ।
ये सारा संसार कन्हैया ।।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

जो न तुम्हरी शरण में आये ।
श्री चरणों में शीश झुकाये ।।
ऐसे हर इंसा का कान्हा ।
जीना है धिक्कार कन्हैया ।।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

जो भी तुम्हरी शरण में आये ।
'मयंक' घी के दीप जलाए ।।
तुम्हरे दम से सबके मन में ।
छाया है उजियार कन्हैया ।।
नमन करो स्वीकार कन्हैया ।।

रघुकुल नन्दन श्री रामचन्द्र

श्री राम चन्द्राय नमः

हमारे प्रभु रघुवर राम रमैय्या ।
राम नाम की लय पे मनवा नाचे ताता थैय्या ॥

उसको मारे कौन प्रभु तुम हो जिसके रखवारे ।
बाल न बाँका हो उसका जो तुमको नित्य पुकारे ॥
वरद हस्त रखेंगी उस पर अपना सीता मैय्या ।
हमारे प्रभु रघुवर राम रमैय्या ।

कौसलेश दशरथ के जाए भक्तों के हितकारी ।
जूठे बेर खाइ शबरी पर कृपा करी अति भारी ॥
पार उतारो आन पड़ी है भव सागर में नैय्या ।
हमारे प्रभु रघुवर राम रमैय्या ।

भक्तों के तुम मात पिता हो बन्धु सखा हो स्वामी ।
घट-घट वास करो तुम सबके तुम हो अन्तरयामी ।।
मेरा भी उद्धार करो हे भरत लखन के भैय्या ।
हमारे प्रभु रघुवर राम रमैय्या ।

जनकपुरी में धनुष भंग कर सिय सों ब्याह रचाया ।
राजा जनक व जनक सुता का संशय दूर भगाया ।।
मुझ 'मयंक' के भी भव में बन जावो नाथ खिवैय्या ।
हमारे प्रभु रघुवर राम रमैय्या ।

कौसलेश रघुनन्दन

सियापति कौसलेश रघुनन्दन ।
करो उद्धार हमारा भगवन ।।

कौसलेश दशरथ के नन्दन, तुम्हरी लीला न्यारी ।
लियो राम अवतार, पड़्यो धरती पै जब दुःख भारी ।।
रावण वंश विनाश कियो, कहलाये असुर निकन्दन ।
सियापति कौसलेश रघुनन्दन ।

सिया स्वयंम्बर जीत जनक की दुविधा तुमने टारी ।
कमल चरण छू तरी अहिल्या भयी शिला से नारी ।।
जो भी तुम्हरो नाम उचारे करै सफल निज जीवन ।
सियापति कौसलेश रघुनन्दन ।

मात-पिता की आज्ञा पाकर भये आप बनवासी ।
चौदह साल रहे बन में तुम हो करके सन्यासी ।।
जीत के लंका तुरत बनाया राजा भक्त विभीषन ।
सियापति कौसलेश रघुनन्दन ।

अमर हो गये तुलसी बाबा लिख कर कथा तुम्हारी ।
बालमीकि ने भक्ति भाव से रामायण लिख डारी ।।
इसको पढ़ कर सब भक्तों के कटे पाप के बन्धन ।
सियापति कौसलेश रघुनन्दन ।

जो भी नाम तुम्हारा लेता खुशियों से भर जाता ।
वैतरणी से पार उतरता भव सागर तर जाता ।।
मुझ 'मयंक' का भी ऐ स्वामी स्वीकारो तुम वन्दन ।
सियापति कौसलेश रघुनन्दन ।

दशरथ नन्दन राम लला

मेरी नइया भव से पार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ।
उद्धार करो उद्धार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ॥

दुःख दर्द भरा जीवन मेरा स्वामी तुम सुख के दाता हो ।
तुम भाई बन्धु सखा स्वामी, तुम सबके भाग्य विधाता हो ॥
अब नमन मेरा स्वीकार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ।
उद्धार करो उद्धार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ॥

बध किया ताड़का का तुमने और सन्तों का उद्धार किया ।
तुमने ऋषियों की रक्षा की और असुरों का संहार किया ॥
मम दुःख का भी संहार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ।
उद्धार करो उद्धार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ॥

हर सुख भोगा उसने जिसने प्रभु तुमसे नाता जोड़ा है ।

वो डूब गया भवसागर में प्रभु जिसको तुमने छोड़ा है ॥

स्वीकार मेरे उद्‌गार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ।

उद्धार करो उद्धार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ॥

जब भी 'मयंक' तुमको ध्याता, छुटकारा पाता कष्टों से ।

इक नाम तुम्हारा रघुनन्दन रक्षा करता है दुष्टों से ॥

मुझपे भी करम इक बार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ।

उद्धार करो उद्धार करो हे दशरथ नन्दन राम लला ॥

जय-जय सियाराम

बोलो भूल के हर इक नाम, सियाराम जय जय सियाराम ।
सदा बनाते बिगड़े काम, सियाराम जय जय सियाराम ॥

राम नाम इतना सुखकारी, जानत हैं सारे नर नारी ।
इससे बढ़कर नाम न कोई, जाने है ये दुनिया सारी ॥
छोड़ के बोलो सारे काम, सियाराम जय जय सियाराम ॥

राम है इस जग के रखवारे, राम जहाँ के पालनहारे ।
नाम लेत हर दुख मिट जाये, इसने सबके काम संवारे ॥
राम को निस दिन करो प्रणाम, सियाराम जय जय सियाराम ॥

जब भी बोलो राम ही बोलो, अपने सब पापों को धो लो ।
राम नाम उच्चारण करके, सबके कानों में रस घोलो ॥
लेते नाम पड़े आराम, सियाराम जय जय सियाराम ॥

कौशलेश दशरथ के जाए, राम ने सबके काम बनाए ।
सियागम लक्ष्मण की गाथा, सबके मन को ख़ूब सुहाए ॥
बोल, 'मयंक' न सोच अंजाम, सियाराम जय जय सियाराम ॥

राम सियाराम

सबके बनाते बिगड़े काम, राम सियाराम, सियाराम, सियाराम।
राम सियाराम... ॥

हृदय बसो मेरे भगवंता, राम लखन सीता हनुमंता।
राम नाम महिमा है अनुपम, राम नाम हर दुख का हंता ॥
सदा उचारो बस ये नाम, राम सियाराम............... ॥

लंकापति ने जब ज़िद ठानी, करने लगा असुर मनमानी ॥
सीता हरण किया दम्भी ने, प्रभु रघुवर की कद्र न जानी ॥
खो बैठा निज वंश तमाम, राम सियाराम............... ॥

जो प्रभु राम की शरण में आवे, वो भवसागर से तर जावे ॥
श्री प्रभु राम के नाम के आगे, कोई दूजा नाम न भावे ॥
सियाराम को कोटि प्रणाम, राम सियाराम.................. ॥

राम नाम की महिमा न्यारी, दूर करे हर दुख बीमारी ॥
इस सच्चाई को समझे तो, मुक्तिधाम की कर तैयारी ॥
नाम लेत मिलता आराम, राम सियाराम............. ॥

कृपा करो रघुवीर

मुझ पै भी अपनी किरपा करो रघुवीर ।
तुमसे मिलन को मनवा मेरा, निस दिन रहत अधीर ॥
मुझ पर .... ॥

कौशलेश दशरथ के जाए, जो भी निस दिन तुमको ध्याये ।
अपने सारे कष्ट मिटाकर, जीवन के सारे सुख पाए ॥
तुम्हरी कथा सुनाये बहता सरयू जी का नीर ।
मुझ पर .... ॥

जो भी तुमसे प्रीत लगाते, वो भवसागर से तर जाते ।
भक्त तुम्हारे रघुकुल नन्दन, दुखियों के दुःख दूर भगाते ॥
हनुमान के हृदय विराजै बस तुम्हरी तस्वीर ।
मुझ पर .... ॥

हो हरि विष्णु के तुम अवतारी, तुम्हरी महिमा सबसे न्यारी ।
जब जब कष्ट पड़े भक्तों पर पीर तुम्ही ने उनकी टारी ॥
कृष्ण जन्म ले तुमने बढ़ायौ पांचाली का चीर ।
मुझ पर .... ॥

राम नाम सबका उपकारी, रटते जो 'मयंक' नर नारी ।
उनको अपनी शरण मे लेते, राम लखन संग जनक दुलारी ॥
राम नाम ले अमर हो गये तुलसी और कबीर ।
मुझ पै भी अपनी किरपा करो रघुवीर ॥

सियापति रघुराई

सारी दुनिया के पालनहार सियापति रघुराई ।
तुम्हरी महिमा है अपरम्पार सियापति रघुराई ॥

राम नाम की महिमा न्यारी, नाम राम का अति सुखकारी ।
जो भजते इसको नर नारी, उनसे हर इक विपदा हारी ॥
भव से करते हैं बेड़ा पार सियापति रघुराई ।
सारी दुनिया के .... ॥

रामचरित मानस पढ़ लीजै, जीवन को सुखमय कर लीजै ।
सुख में राम नाम जप कीजै, कष्टों को मत आने दीजै ॥
सच्चे जीवन के हैं आधार, सियापति रघुराई ॥
सारी दुनिया के .... ॥

रामशरण में जो आ जाते, वो सबके दुःख दर्द मिटाते ।
जो श्रीराम के दर्शन पाते, जीवन अपना सफल बनाते ॥
अपने भक्तों को करते प्यार, सियापति रघुराई ।
सारी दुनिया के .... ॥

राम लखन के जो गुण गावैं, माँ सीता को शीश झुकावैं ।
उनको रघुनन्दन अपनावैं, जीवन नैय्या पार लगावैं ॥
असुरों का करें संहार, सियापति रघुराई ।
सारी दुनिया के .... ॥

राम राज्य जिस दिन आयेगा, पाप जहाँ से मिट जायेगा ।
हर झूठा मुँह की खायेगा, 'मयंक' सच्चा सुख पायेगा ॥
इस जमाने की है सरकार, सियापति रघुराई ।
सारी दुनिया के पालनहार सियापति रघुराई ॥

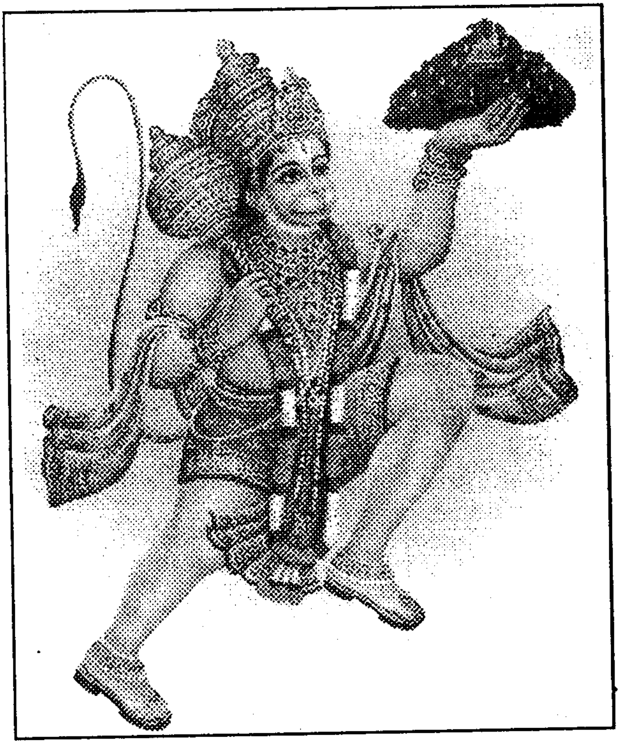

श्री राम भक्त हनुमान

श्री हनुमन्ताय नमः

सबसे बढ़कर है दुनिया में तुम्हरी ऊँची शान ।
जय जय राम भक्त हनुमान, जय जय राम भक्त हनुमान ॥

आप कृपा की मूरत हैं, प्रभु आप दया के सागर ।
हर मुश्किल आसाँ हो जाती, पास तुम्हारे आकर ॥
कृपा करो मुझ पर भी, कपिवर आप है कृपानिधान ।
जय जय राम भक्त हनुमान.......................... ॥

जो भी तेल सिंदूर चढ़ावे दया तुम्हरी पावे ।
तुम्हरी पूजा शनि प्रकोप से ऐ हनुमान बचावे ॥
तुमसा तनमन की ताकत में कोई नहीं बलवान ।
जय जय राम भक्त हनुमान.......................... ॥

हे कपीश सब देवासुर भी तुम्हरी महिमा गावें ।
तुम्हरी महिमा गाकर अपना जीवन सफल बनावें ॥
जितने तुम बलशाली हो, उतने ही गुण की खान ।
जय जय राम भक्त हनुमान......................... ॥

भूत, पिशाच नाम सुन तुम्हरा, पास 'मयंक' न आवें ।
महावीर जब कृपा करें तो सब दुःख कटि कटि जावें ॥
तुमसा भक्त नहीं है कोई, जाने सकल जहान ।
जय जय राम भक्त हनुमान, जय जय राम भक्त हनुमान ॥

महावीर हनुमान

जय जय महावीर हनुमान ।
आया हूँ मैं शरण तिहारी पत राखो भगवान ॥

अंजनि पुत्र पवन सुत, जो भी निस दिन तुमको ध्यावे ।
भूत पिशाच पास नहीं आवे, मन वांछित फल पावे ॥
राम भक्त तुम जैसा कोई और नहीं बलवान ।
जय जय महावीर हनुमान ॥

मेघनाद ने युद्धभूमि में अपनी शक्ति चलाई ।
जिसको खाकर हुए मूर्छित लखन राम के भाई ॥
लाय सजीवन और बचाई लखन लला की जान ।
जय जय महावीर हनुमान ॥

हे हनुमान ज्ञान गुण सागर अतुलित बल के स्वामी ।
तुम हो अगम अगोचर भगवन तुम हो अन्तर्यामी ।।
देवासुर सब मिलकर तुम्हरी लीला करें बख़ान ।
जय जय महावीर हनुमान ।।

जब तुम पर कोई भी आकर तेल सिंदूर चढ़ावे ।
शनि प्रकोप से मुक्ती पावे, जीवन सफल बनावे ।।
कृपा करो केसरी नन्दन, तुम हो कृपा निधान ।
जय जय महावीर हनुमान ।।

आप दया के सागर है, प्रभु मुझको दास बनाओ ।
मुझ 'मयंक' को निज चरणों में प्रभु स्थान दिलाओ ।।
आप दया के सागर है, प्रभु करें दया का दान ।
जय जय महावीर हनुमान ।।

बजरंग बली

तुम राम लखन के प्यारे हो, बजरंग बली, बजरंग बली ।
सिय माँ की आँख के तारे हो, बजरंग बली, बजरंग बली ।

मैं पास तुम्हारे आ न सकूं, भवसागर बीच पड़ा स्वामी ।
मै दरस तुम्हारे पा न सकूं, मै पापी और कुटिल कामी ॥
बस तुम ही एक सहारे हो, बजरंग बली, बजरंग बली ।
तुम राम लखन के .... ॥

मेरी इस जीवन नैय्या को, बस तुम्ही बचाने वाले हो ।
हिचखोले खाती नैय्या के केवल तुम ही रखवाले हो ॥
इक तुम ही खेवनहारे हो, बजरंग बली, बजरंग बली ।
तुम राम लखन के .... ॥

जो शरण तुम्हारी आता है, वो मन वांछित फल पाता है ।
जो रोते रोते आता है, वो हँसते हँसते जाता है ॥
सब कहते आप हमारे हो, बजरंग बली, बजरंग बली ।
तुम राम लखन के .... ॥

जिस ओर 'मयंक' ने देखा है अंधियारा ही अंधियारा है ।
तुम राह दिखाते हो सबको, जग पे एहसान तुम्हारा है ॥
इस तम में तुम उजियारे हो, बजरंग बली, बजरंग बली ।
तुम राम लखन के .... ॥

हर-हर महादेव शिव शंकर

"ओउम नमः शिवाय"

ओउम नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।
दुख जीवन में पास न आय, सुख में बोलो अलख जगाय ॥
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ॥

रोज भभूत लगाते अंग, माथे पर है शोभित गंग ।
बम बम भोले पीकर भंग, विचरे पारवती के संग ॥
बोलो अपने हृदय बसाय, नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ॥

जग के स्वामी दीन दयाल, चन्द्र बिराजे तुम्हरे भाल, ।
गले पड़ी सरपों की माल, रूप सलोना भृकुटि विशाल, ॥
जो देखे मस्ती में गाय, नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ॥

देव कोई जब हो न सहाय, तू जो भव सागर फंस जाय, ।
भोले बाबा को तू ध्याय, तेरा हर इक दुख मिट जाय, ।।
गाता जा सब कुछ बिसराय, नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

करते तुम परवत पर बास, देवासुर गण तुम्हरे दास, ।
जो करते तुम पर विश्वास, दुख ना आते उनके पास, ।।
केवल एक ही मंत्र सुहाय, नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

पियें हलाहल जब शंकर, ताण्डव करते परवत पर, ।
सुर दें देवासुर किन्नर, डमरू बोले डमर डमर, ।।
'मयंक' शिव शंकर गुन गाय, नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

महादेव शिव भोले

जय जय महादेव शिव भोले ।
कांपे तीनों लोक जो प्रभु का डमरू डम डम बोले ॥

तीनों लोकों के स्वामी हैं पार्वती पति शंकर, ।
गल भुजंग, कटि में मृगछाला नीलकंठ गंगाधर ॥
नेत्र तीसरा जब खोलें शिव डगमग धरती डोले ॥
जय जय महादेव शिव भोले ॥

मंत्र महामृत्युन्जय का जो निस दिन है दोहराते, ।
मृत्यु अकाल नहीं आती है, भय से मुक्ति पाते ॥
पाप कटे उसके जो इनके पग अंसुवन से धोले, ॥
जय जय महादेव शिव भोले ॥

गौरी शंकर के विवाह के कथा सुने जो प्राणी, ।
उसकी रक्षा करे महाशिव और माता कल्याणी ।।
शिव स्तुति की ध्वनि भक्तों के कानों में रस घोले, ।।
जय जय महादेव शिव भोले ।।

पावन शिव चौदस के दिन प्रभु जी ने ब्याह रचाया, ।
इस दिन व्रत रखने वालों ने मन वांछित फल पाया ।।
इस व्रत को रखके 'मयंक' तू भी प्रसन्न मन होले, ।।
जय जय महादेव शिव भोले ।।

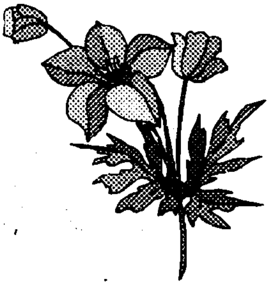

नीलकण्ठ कैलाश निवासी

रूह मेरी उसके दरशन की प्यासी है ।
नीलकण्ठ है जो कैलाश निवासी है ॥

जटा जूट में जिसके गंग विराजे है, ।
शशि भूषण बन जिसके मस्तक साजे है ॥
जो त्रिपुरारी अजर अमर अविनासी है, ॥
रूह मेरी उसके दरशन की प्यासी है ॥

कर त्रिशूल है जिसके कटि मृगछाला है, ।
गर्दन में जिसके सर्पों की माला है ॥
सृष्टि सदा जिसके चरणों की दासी है, ॥
रूह मेरी उसके दरशन की प्यासी है ॥

बैठ के पर्वत पर जो ध्यान लगाता है, ।
गौरी पति है अंग भभूत रमाता है ।।
जो मन से राजा तन से सन्यासी है, ।।
रूह मेरी उसके दरशन की प्यासी है ।।

नेत्र तीसरा खोले तो आ जाय प्रलय, ।
सारे देव 'मयंक' करें जिसकी जय-जय ।।
जिसके भाल से मुखरित पूरनमासी है, ।।
रूह मेरी उसके दरशन की प्यासी है ।।

भोले भण्डारी

होकर नन्दी पे सवार, आ जाओ भोले भंडारी,
सुन लो भक्तों की पुकार, आ जाओ भोले भंडारी ।

गौरी माँ के साथ विराजो पर्वत पे तुम शंकर, ।
भूत, पिशाच, गणों की सेना रहती है पहरे पर, ॥
छोड़ के अपना वो दरबार, आ जाओ भोले भंडारी ॥
होकर नन्दी पे सवार..............................॥

मस्तक सोहे चन्द्र, गले में है सर्पों की माला, ।
अंग भभूत रमाए बैठे, कटि पहने मृगछाला, ॥
मेरा नमन करो स्वीकार, आ जाओ भोले भंडारी ॥
होकर नन्दी पे सवार..............................॥

ताण्डव नृत्य करें जब शंकर, डम डम डमरू बोले, ।
माँ गंगा धरती पे आएं, जटा जूट जब खोलें, ॥
तुम्हरी देव करें जयकार, आ जाओ भोले भंडारी ॥
होकर नन्दी पे सवार..............................॥

जिसने भी सच्चे मन से तुमको आवाज लगाई, ।
तब तब तुमने आकर उसकी बिगड़ी बात बनाई, ।।
करने मेरा भी उद्धार, आ जाओ भोले भंडारी ।।
होकर नन्दी पे सवार.............................।।

भव सागर में आन पड़ा हूँ, मुझको आज बचाओ, ।
जर्जर ज़ीवन की नैय्या को, राह सही दिखलाओ, ।।
मेरी नैय्या करने पार, आ जाओ भोले भंडारी ।।
होकर नन्दी पे सवार.............................।।

तुम तीनों लोकों के स्वामी, तुम जग के हितकारी, ।
सत्यम् शिवम् सुन्दरम्, तुम में तीनों है त्रिपुरारी, ।।
कहता है 'मयंक' परिवार, आ जाओ भोले भंडारी ।।
होकर नन्दी पे सवार, आ जाओ भोले भंडारी ।।

भोले शंकर जी

हैं देवों में देव महान, भोले शंकर जी ।
है अदभुत तुम्हारी शान, भोले शंकर जी ।।

पर्वत पर नंदी श्रृंगी संग तन पर भस्म रमावें ।
देवासुर नर किन्नर सारे जिनकी स्तुति गावें ।।
वो हैं नील कंठ भगवान, भोले शंकर जी ।।
है अदभुत तुम्हारी शान.............................।।

जटा जूट में गंग विराजै, भाल चन्द्रमा सोहे ।
भोले नाथ तुम्हारी सूरत, सबके मन को मोहे ।।
सबको देते अभय का दान भोले शंकर जी ।।
है अदभुत तुम्हारी शान.............................।।

गरवा में सर्पों की माला, कटि में है मृगछाला
नेत्र तीसरा खोल करें वो, तांडव डमरू वाला
तुम्हरी सबसे अलग पहचान भोले शंकर जी
है अदभुत तुम्हारी शान.........................॥

जो भी तुम्हरी शरण में आवै, मनवांछित फल पावै ।
जो शिव महिमा सुने, कभी दुःख उसके पास न आवै ॥
मुझ 'मयंक' का भी करो कल्याण भोले शंकर जी ॥
है अदभुत तुम्हारी शान भोले शंकर जी ॥

हर-हर महादेव शिव शंकर

हर हर महादेव शिव शंकर ।
कृपा करो हे केदारेश्वर ॥
हर हर महादेव शिवशंकर ॥

गौरी पति कैलाश निवासी
अगम, अगोचर हे अविनाशी
अभय दान दो हे अभ्यंकर ॥
हर हर महादेव शिवशंकर ॥

तुम्हरे भाल चन्द्रमा साजे
जटा जूट में गंग विराजे
चरण पखारे मानसरोवर ॥
हंर हर महादेव शिवशंकर ॥

भोले भंडारी त्रिपुरारी
करते हैं नन्दी की सवारी
पूजें तुम्हें देव, नर, किन्नर ॥
हर हर महादेव शिवशंकर ॥

तांडव नृत्य करें जब शंकर
हाहाकार मचे धरती पर
लाज रखो मेरी प्रलयंकर ॥
हर हर महादेव शिवशंकर ॥

कंठ नीलिमा है हलाल की
ये महिमा है महाकाल की
कृपा करो हे ओंकारेश्वर ॥
हर हर महादेव शिवशंकर ॥

मुझ 'मयंक' को दरस दिखाओ
जनम जनम की प्यास बुझाओ
विनय करूं मैं हाथ जोड़कर ॥
हर हर महादेव शिवशंकर ॥

हे अभ्यंकर

हे बाबा भोले भंडारी ।
हे शिव शंकर, हे अभ्यंकर, लीला तुम्हरी न्यारी ॥
हे बाबा भोले भंडारी ॥

गौरी पति नन्दी पे चढ़कर पर्वत पे जब आवें ।
मानव, देवासुर और किन्नर उनकी महिमा गावें ॥
हर हर हर हर महादेव से गूंजे दुनिया सारी ।
हे बाबा भोले भंडारी ॥

तन भभूत, माथे शशि सोहे, गल सर्पों की माला ।
हाथ त्रिशूल, साथ में डमरू, कटि में है मृगछाला ॥
शंकर जी के साथ विराजै पार्वती महतारी ।
हे बाबा भोले भंडारी ॥

तांडव नृत्य करें जब शंकर डम डम डमरू बोले।
आसमान भी काँप उठे और धरती हाले डोले॥
काँपें किन्नर, असुर, देव और धरती के नर नारी।
हे बाबा भोले भंडारी॥

जटा जूट में महादेव के माता गंग सुहावें।
जनहित में विष पीकर शंकर नीलकंठ कहलावें॥
पार्वती के संग सदा नन्दी पर करें सवारी।
हे बाबा भोले भंडारी॥

ओउम नमः शिवाय

मूल मंत्र ये मत बिसराओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।
कष्ट पड़े तो रटते जाओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

रामबाण ये मंत्र हमारा ।
जिसने सबका भाग्य संवारा ।।
आओ मिल जुल कर दोहराओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

गर इसको तुम बिसराओगे ।
जीवन भर फिर पछताओगे ।।
अब भी वक्त है सुनो सुनाओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

शिव भोले देवों के प्यारे ।
पूजो इनको सांझ सकारे ।।
कहते कहते शीश झुकाओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ।।

शिवजी की महिमा अति न्यारी ।
शिव ही बन्धु, सखा, महतारी ॥
ये कह कर शिव के गुण गाओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ॥

शिव शंकर भोले भंडारी ।
गंगाधर, बाघम्बर धारी ॥
कहते-कहते अलख जगाओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ॥

जो 'मयंक' ये मंत्र पढ़ेंगे ।
उनके बिगड़े काम बनेंगे ॥
तुम भी ये कह कर हरषाओ ।
नमः शिवाय ओउम नमः शिवाय ॥

हे शिव शंकर ओंकारेश्वर

लीला तुम्हरी न्यारी
ओ भोले भंडारी।

तुम्हरे भाल चंद्रमा साजे
जटाजूट में गंग विराजे
नृत्य करो पर्वत पै जब तुम
डम डम डम डम डमरू बाजे
चरणों में हम आन पड़े हैं
रखियो लाज हमारी,
ओ भोले भंडारी
लीला तुम्हरी ....

हे अभयंकर हे अविनाशी
सारी सृष्टि तुम्हारी दासी
तुम्हरे दरस के सब अभिलाषी
वो गृहस्थ हो या सन्यासी
मां गौरी संग नन्दी पर
प्रभु करते आप सवारी
ओ भोले भंडारी
लीला तुम्हरी ....

हे शिवशंकर ओंकारेश्वर
हे परमेश्वर हे रामेश्वर
महाकाल हे केदारेश्वर
हे सोमेश्वर हे जगदीश्वर
नाम लेत ही निज भक्तों की
तुमने विपदा टारी
ओ भोले भंडारी
लीला तुम्हरी ....

रूप मनोहर भोलाभाला
गरवा में सरपों की माला
आसन है प्रभु का मृगछाला
जो देखे होवे मतवाला
निज 'मयंक' को पार लगाओ
ओ बाघम्बरधारी
ओ भोले भंडारी
लीला तुम्हरी ....

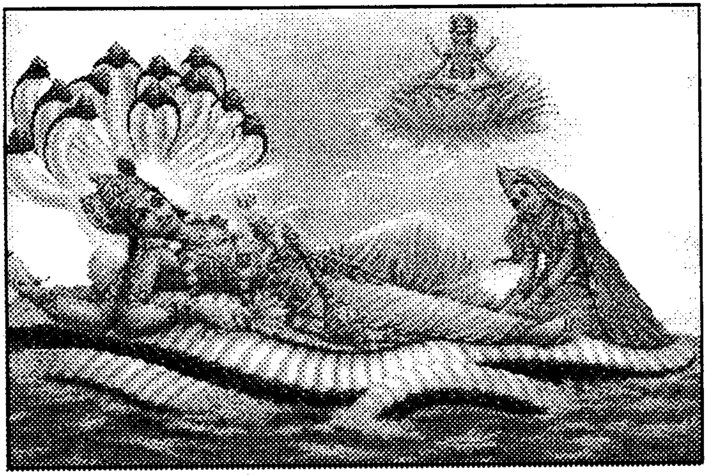

श्री हरि सत्यदेव भगवान

श्री सत्यदेवाय नमः

हे जगपालक, हे प्रलयंकर, हे परमेश्वर, हे परमेश्वर ।
अगम, अगोचर और निरन्तर, हे परमेश्वर हे परमेश्वर ॥

ब्रह्मा, विष्णु, महेश तुम्ही हो, सबके हरते क्लेश तुम्ही हो ।
तुम्हरी आज्ञा से ही निकलें, चाँद सितारे और दिवाकर ॥
हे परमेश्वर................................. ॥

जग के पालनहार तुम्हीं हो, जीवन के आधार तुम्हीं हो ।
ऐ तीनों लोकों के स्वामी, तुमसे नही है कोई बढ़कर ॥
हे परमेश्वर................................. ॥

पाप जगत में जब है बढ़ते, तब अवतार लिया तुम करते ।
अभयदान दो मुझ 'मयंक' को हे अभ्यंकर, हे सर्वेश्वर ॥
हे परमेश्वर, हे परमेश्वर, हे परमेश्वर, हे परमेश्वर ॥

मन को धो लो

तन को छोड़ो मन को धोलो ।
जीवन क्षीण हो रहा छिन छिन, प्रभु का नाम उचारो निशि दिन,
प्रभु का नाम मधुर मिश्री सा, बोलो कानों में रस घोलो ।
तन को छोड़ो.................................॥

जब जब प्रभु को याद करोगे, प्रभु से ही फरियाद करोगे,
पाप अगर अपने धोने है, प्रभु की याद में नैन भिगो लो ।
तन को छोड़ो.................................॥

सर्वोत्तम सन्तों की वाणी, सुनने में जो लगे सुहानी,
जब सन्तो की टोली आये, तुम भी उनके संग में होलो ।
तन को छोड़ो.................................॥

खुद को अगर समझ जाओगे, ईश्वर के दर्शन पाओगे,
लेकिन उससे पहले भक्तों, अपने मन की अँखियां खोलो ॥
तन को छोड़ो.................................॥

सत्कर्मों का पानी लेकर, मन को धोओ रगड़-रगड़ कर,
फिर ईश्वर दर्शन से पहले 'मयंक' अपना हृदय टटोलो ।
तन को छोड़ो मन को धोलो ॥

भक्तों को प्यार करो

गर ईश्वर से है प्यार तो फिर, उसके भक्तों को प्यार करो।
प्रभु बसते है निज भक्तों में, इस बात को तुम स्वीकार करो ॥

सन्यासी, साधू, संत सदा सारी दुनिया से कहते हैं,
प्रभु दीन बन्धु हितकारी है, दीनों के दिल में रहते हैं ।
प्रभु कृपा अगर जो पानी है, तो दीनों का उद्धार करो ॥
गर ईश्वर से है..॥

वो दीनबन्धु दुःख हरता हैं, सारी दुनिया के सृष्टा हैं,
वो ऊँच-नीच, पावन-पापी, सबके स्वामी, समसृष्टा हैं ।
इसलिये दीन-दुखियों मे ही, तुम ईश्वर का दीदार करो ॥
गर ईश्वर से है..॥

प्रभु दया नेह के सागर है, प्रभु कृपा सिंधु सर्वेश्वर हैं,
वो शंख गदाधर, मुरलीधर, बलशाली और धनुर्धर हैं ।
बस याद उन्ही परमेश्वर को, तुम दिल से बारम्बार करो ॥
गर ईश्वर से है......................................॥

परमेश्वर अगम, अगोचर हैं, हैं आदि वही और अन्त वही,
वो क्षीर सिन्धु के वासी हैं और श्री कमला के कन्त वही ।
उनकी पूजा से ऐ 'मयंक' सुखमय निज घर संसार करो ॥
गर ईश्वर से है प्यार तो फिर, उसके भक्तों को प्यार करो ॥

जगदीश हरे

जब सबके कष्ट निवारेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ।
फिर हमको क्यों न उबारेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ॥

प्रभु हम तो हैं नादां बालक, और आप जगत के हैं पालक,
दम में है दम अपने जब तक, हम आपको ध्यायेंगे तब तक ।
और हरदम यही पुकारेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ॥

जब दया दृष्टि हो जायेगी, बिगड़ी किस्मत बन जायेगी,
जगदीश प्रभु की किरपा ही, भक्तों को पार लगायेगी ।
सब बिगड़े काज सवांरेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ॥

हम तो बस इतना ही जानें, वो ही इस जग के है स्वामी,
वो अगम, अगोचर, अविनाशी और वो ही है अन्तर्यामी ।
वो ही हम सबको तारेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ॥

जो दरस आपके पायेंगे, वो धन्य धन्य हो जायेंगे,
जो भक्त आपको ध्यायेंगे, वो भव से क्यूँ घबरायेंगे ।
वैतरणी पार उतारेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ।।

है ये 'मयंक' की चाह प्रभू, दिखलायें सच्ची राह प्रभू,
हो नज़र आपकी तो जग की, मैं करूँ नहीं परवाह प्रभू ।
हम आपकी ओर निहारेंगे, जगदीश हरे, जगदीश हरे ।।

चरणों में झुक जाने दो

अभिमान भरा मेरा मस्तक, प्रभु चरणों में झुक जाने दो ।
फिर भक्ति में होकर लीन, मुझे ये जीवन सफल बनाने दो ।।

अनुपम ईश्वर की माया है, जिसने संसार बनाया है ।
वैसे तो बहुत विराट है वो, कण कण में मगर समाया है ।
मुझको उस अन्तर्यामी के दरशन पाकर इतराने दो ।
अभिमान भरा..।।

ये तन जो पापों का घर है, इतराता क्यूँ तू इस पर है ।
जिसमें तू भटक रहा पागल वो माया जाल का चक्कर है ।
इस माया जाल के चक्कर से, मुझको छुटकारा पाने दो ।
अभिमान भरा..।।

प्रभु दीन दुखी के रक्षक है, मेरे प्रभु अन्तर्यामी हैं ।
वो मात-पिता है, भ्राता है, वो मकल जगत के स्वामी हैं ।
मुझको उस पावन ईश्वर के गुण गा गा कर हरसाने दो ।
अभिमान भरा...॥

इक दया दृष्टि परमेश्वर की, जिस जिस पर भी हो जाती है ।
उसके मन उपवन की बगिया, आशा के सुमन खिलाती है ।
मुझको प्रभु नाम की खुशबू से निज जीवन को महकाने दो ।
अभिमान भरा...॥

इस जीवन की डगमग करती, ये मुझ 'मयंक' की नैय्या है ।
इस जग के तारन हार प्रभु और उसका नाम खिवैय्या है ।
प्रभु स्तुति से जीवन नैय्या मुझको भी पार लगाने दो ।
अभिमान भरा मेरा मस्तक, प्रभु चरणों में झुक जाने दो ॥

सत्यदेव भगवान

तुम्हरो देव करें गुणगान, स्वामी सत्यदेव भगवान ।
तुम्हरी महिमा करें बखान, स्वामी सत्यदेव भगवान ।।

शेष नाग शैय्या पर, माँ कमला संग विष्णु विराजें ।
गदा, चक्र और शंख तुम्हारे कर-कमलों में साजें ।
तुम्ही दया के सागर, भगवन तुम हो कृपानिधान ।
स्वामी सत्यदेव भगवान..........................।।

धरती पर जब पाप बढ़े, अवतार तुम्हीं लेते हो ।
अभयदान का भक्तों को, आशीष तुम्हीं देते हो ।
जग के पालनहार हमें भी, दो दर्शन का दान ।
स्वामी सत्यदेव भगवान..........................।।

जो भी पूरणमासी के दिन, तुम्हरी कथा करावें ।
व्रत रक्खें और निष्ठा से, प्रभु तुमको भोग लगावें ।
कष्ट मिटे उनके सारे और पायें सुख सम्मान ।
स्वामी सत्यदेव भगवान..............................॥

सत्यदेव सा सारे जग में, देव न कोई दूजा ।
कलयुग में सबसे उत्तम है, सत्यदेव की पूजा ।
सत्यदेव का नाम लेते ही हो जाता कल्याण ।
स्वामी सत्यदेव भगवान..............................॥

विष्णु, चतुर्भुज, सत-नारायण नाम तुम्हारे सारे ।
दौड़े दौड़े आते हो जब, कोई भक्त पुकारे ।
तुम्हरे कारण है 'मयंक' की आन बान और शान ।
स्वामी सत्यदेव भगवान, स्वामी सत्यदेव भगवान ॥

सिंह वाहिनी दुर्गे मैय्या

जय माँ शेरावाली

ओ माँ अम्बे माँ जगदम्बे

मेरी नैय्या पार लगा देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।

मेरा हर दुःख दर्द मिटा देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।।

मै भटक रहा हूं मुद्दत से चलना भी मुझे नहीं आता ।

अब इत जाऊँ या उत जाऊँ, मै ये भी समझ नहीं पाता ।

मुझे सीधी राह बता देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।

मेरी नैय्या पार लगा देना............................।।

तेरे दरबार में ओ मैय्या, जलती है ज्योत अखंड सदा ।

उद्दंड अंधेरों को मैय्या, तू देती है बस दंड सदा ।

मेरे मन में ज्योत जला देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।

मेरी नैय्या पार लगा देना............................।।

हम धन दौलत के लोभी है, बस कहने को ही जोगी हैं ।
तन से हम स्वस्थ लगें लेकिन, हम अपने मन से रोगी हैं ।
माँ भक्ति की हमें दवा देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।
मेरी नैय्या पार लगा देना..............................॥

तेरे चरणों की धूल ओ माँ, मै सदा लगाऊँ मस्तक पर ।
स्थान मुझे चरणों में दो, फिर जाऊँ नहीं कहीं उठकर ।
आशीष मुझे ऐसा देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।
मेरी नैय्या पार लगा देना..............................॥

ओ जोता वाली माँ अम्बे, तेरी तो शेर सवारी है ।
तूने 'मयंक' से लोगों की, बिगड़ी तकदीर संवारी है ।
मेरी बिगड़ी बात बना देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ।
मेरी नैय्या पार लगा देना, ओ माँ अम्बे, माँ जगदम्बे ॥

नाचे रे लांगुरिया

मेरी मैय्या के दरबार में नाचे रे लांगुरिया ।
भक्तों इस सांचे दरबार में नाचे रे लांगुरिया ॥

जब से सुना है आने को है शेरा वाली मैय्या ।
तबसे देकर ताले नाच रहा है ता ता थैय्या ।
अम्बे माँ के इन्तजार में, नाचे रे लांगुरिया ।
मेरी मैय्या के दरबार में..........................॥

उसे पता है इन राहों से गुजरेगी माँ अम्बे ।
बैठ शेर पर बीच शहर से जायेगी जगदम्बे ।
बस तब से बीच बाजार में नाचे रे लांगुरिया ।
मेरी मैय्या के दरबार में..........................॥

जोता वाली, लाटा वाली, जब मैय्या आयेगी ।
ठुमक ठुमक नाचत गावत वो जोगनिया लायेगी ।
खोकर माँ के दुलार में नाचे रे लांगुरिया ।
मेरी मैय्या के दरबार में..........................॥

दरसन की प्यासी धरती को दरसन माता देगी ।
इसकी खातिर राह कौन सी जाने माता लेगी ।
ये सोच के कुल संसार में नाचे रे लांगुरिया ।
मेरी मैय्या के दरबार में..........................॥

'मयंक' माँ की रक्षा को ही जनम लिया है उसने ।
केवल माता की ममता का जाम पिया है उसने ।
निस दिन धार रखे तलवार में नाचे रे लांगुरिया ।
मेरी मैय्या के दरबार में नाचे रे लांगुरिया ॥

शेरॉ वाली की जय बोलो

जब भी मुँह अपना तुम खोलो ।
शेराँ वाली की जय बोलो ।।

गर्मी, बरसात, जाड़ों में, मैय्या रहती पहाड़ों में ।
वादियाँ गूँजे, मैय्या के, शेरों की दहाड़ों में ।
सबके कानों में रस घोलो, शेराँ वाली की जय बोलो ।।

टोलियाँ जो भी जाती हैं, माँ के गुणगान गाती हैं ।
जय माता के नारों से, घाटियाँ गूँज जाती हैं ।
तुम भी साथ उनके, अब हो लो, शेराँ वाली की जय बोलो ।।

माँ के दरबार में आयेंगे, सारे दुख दर्द मिट जायेंगे ।
रोते रोते जो मांगेंगे, माँ के चरणों में सब पायेंगे ।
पाप अपने सभी धो लो, शेराँ वाली की जय बोलो ।।

सबको माता की महिमाओं से, जो भी अवगत कराते हैं ।
साथ अपने वो गैरों के सारे, दुखड़े मिटाते हैं ।
सबसे कहते हुए डोलो, शेराँ वाली की जय बोलो ॥

जो भी कहना है माँ से कहो, माँ सब कुछ समझती है ।
अपने भक्तों की पीड़ा 'मयंक' माँ स्वयम् दूर करती है ।
नींदें सुख से भरी सो लो, शेराँ वाली की जय बोलो ॥

ऐ दुरगे माँ शेरॉ वाली

ऐ दुरगे माँ शेराँवाली ।
तेरे दर पे जो भी आया, गया न लेकर झोली खाली ॥

पाये जिसने तेरे दर्शन, उसका धन्य हुआ है जीवन ।
जिस घर में हो तेरा पूजन, खुशियों से भर जाए आँगन ।
भवसागर से तर जाता वो, जिसने तेरी किरपा पाली ।
ऐ दुरगे माँ शेराँवाली.................................॥

द्वार तुम्हारे जो भी आता, अपना मनवांछित फल पाता ।
तुम्हरा आदर करते माता, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, विधाता ।
रूप अनेक है तेरे दुर्गा, अम्बे, वैष्णों देवी, काली ।
ऐ दुरगे माँ शेराँवाली.................................॥

दिल करता है मै भी आऊँ, द्वार पे तेरे शीश झुकाऊँ ।
तेरी जय जयकार से माता, अपना हर दुख दर्द मिटाऊँ ।
तेरी करूं अर्चना, पूजा, जो न कभी जाए माँ ख़ाली ।
ऐ दुरगे माँ शेराँवाली................................॥

जो 'मयंक' माँ के गुण गावें, घर में अपने भजन करावें ।
विधि विधान से माँ को ध्यावें, मां की ज्योत अखंड जलावें ।
काली रात न आवे उनके, घर में होती रोज दिवाली ।
ऐ दुरगे माँ शेराँवाली ॥

शेरॉं वाली के दरबार में

आइए, आइए, आइए, शेराँवाली के दरबार में
अपने सब दुख मिटा जाइये, शेराँवाली के दरबार में ।

माँ के दरबार जायेगा जो, माँ की ममताएं पायेगा वो
माँ की ममताके आँचल तले, अपने दुखड़े मिटायेगा वो
आप बिल्कुल न घबराइये, शेराँवाली के दरबार में ।
आइये.........

धन से, दौलत से, औलाद से झोलियाँ सबकी भरती है माँ
दान देके दया का सदा, हमपे उपकार करती है माँ
ले लो जो भी तुम्हे चाहिये, शेराँवाली के दरबार में ।
आइये.........

माँ के बस में सभी कुछ तो है, जो भी चाहोगे मिल जायेगा ।
जो न दरबार में जायेगा, वो यकीनन ही पछतायेगा ।
जो भी चाहे वहीं पाइये, शेराँवाली के दरबार में ।।
आइये.........

माँ को चुनरी चढ़ाते हैं जो, शीश अपना झुकाते हैं जो ।
अपने मन की मुरादें सभी, माँ के चरणों में पाते हैं वो ।
माँ की भेंटें सभी गाइये, शेराँवाली के दरबार में ।।
आइये.........

जो दया माँ की पा जायेगा, और क्या शेष रह जायेगा ।
जो न माँ के क़रीब आयेगा, ये जहां उसको ठुकरायेगा ।
आप दुनिया को ठुकराइये, शेराँवाली के दरबार में ।।
आइये.........

माता ने बुलाया है दरबार में

बैठे हो तुम किसके इन्तजार में ?
माता ने बुलाया है दरबार में ।

जो भी माता के दरबार में जायेंगे ।
माता शेरोंवाली के गुण गायेंगे ।
उन्हें मज़ा कब आयेगा संसार में ।
माता ने बुलाया है दरबार में ।।

दया सभी पर करती हैं शेरावाली ।
उसके भवन से जाता नहीं कोई खाली ।
डूब के देखो तुम मैय्या के प्यार में ।
माता ने बुलाया है दरबार में ।।

भक्तों की हर बिगड़ी बात बनाती है ।
मैय्या भव से नैय्या पार लगाती है ।
नही कष्ट होता कोई मँझधार में ।
माता ने बुलाया है दरबार में ।।

एक बार कर ले 'मयंक' माँ के दर्शन ।
धन्य-धन्य हो जायेगा तेरा जीवन ।
बड़ा लुत्फ़ है मैय्या के दीदार में,
माता ने बुलाया है दरबार में ।।

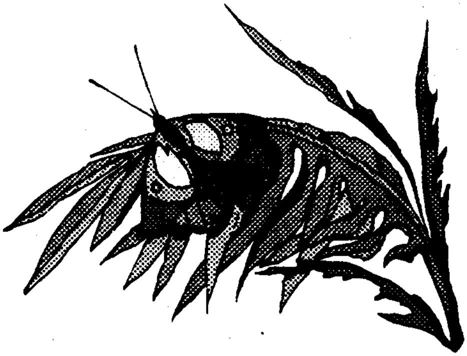

जयकारा शेरॉ वाली का

बोलो बोलो रे जयकारा माता शेरॉवाली का,
शेरॉवाली का कि मैय्या जोतां वाली का ।
बोलो बोलो रे..................................॥

माँ के भवन पे जाकर देखो छाये हैं उजियारे,
टंके हैं मैय्या की चूनर में सूरज, चाँद, सितारे ।
जिनसे दमके है चौबारा, माता शेरॉवाली का,
बोलो बोलो रे..................................॥

जो माता के मन्दिर जावें, माँ की अलख जगावैं,
दुनिदारी भूल के जो चरणों में शीश झुकावैं ।
उनको मिलता सदा सहारा, माता शेरॉवाली का,
बोलो बोलो रे..................................॥

माँ की जोत दूर करती है, मन के सब अँधियारे,
जो माता की भेंटें गाये, कष्ट दूर हो सारे ।
काटे सारे पाप दुधारा, माता शेरॉवाली का,
बोलो बोलो रे...................................॥

लांगुरिया करते 'मयंक' इस भवन की पहरेदारी,
दुष्टों का संहार करे माँ करके शेर सवारी ।
जय जयकार करे नक्कारा, माता शेरॉवाली का,
बोलो बोलो रे जयकारा माता शेरॉवाली का ॥

मैय्या आ जाना

आ जाना हमारे द्वार मैय्या आ जाना ।
अपने भक्तों की सुनकर पुकार मैय्या आ जाना ।।

मात सरस्वति बनके आना
वीणा अपने साथ में लाना
अपने हंसों पै होके सवार
मैय्या आ जाना, आ जाना..

दुर्गा माता बन कर आना
जोगनियों को सांथ में लाना
अपने शेरों पै होके सवार
मैय्या आ जाना, आ जाना..

गौरा मैय्या बनके आना
भोले जी को साथ में लाना
होके उनके नंदी पै सवार
मैय्या आ जाना, आ जाना...

माता लक्ष्मी बनके आना
विष्णु जी को साथ में लाना
होके उनके गरूण पै सवार
मैय्या आ जाना, आ जाना...

रिद्धि सिद्धि तुम बनके आना
गणपति जी को साथ में लाना
होके उनके मूषक पै सवार
मैय्या आ जाना, आ जाना...

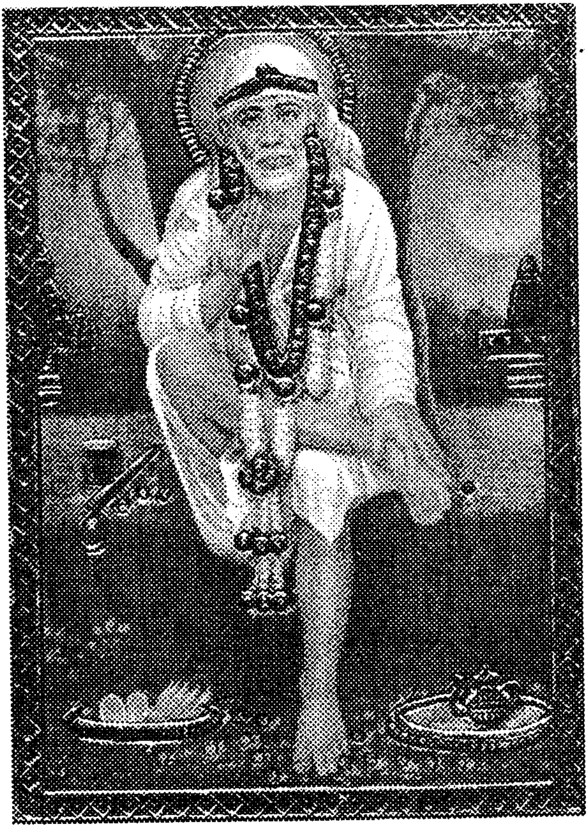

जय साईं राम

बोलो साईं साईं राम

इस जैसा नहिं दूजा नाम, बोलो साईं साईं राम ॥

साईं नाम बड़ा हितकारी, साईं कलियुग के अवतारी ।
नाम लेत साईं बाबा का, मिट जाते सब दुःख बीमारी ।
बन जायेंगे बिगड़े काम, बोलो साईं साईं राम ॥

जो भी हैं शिर्डी को जाते, मन्दिर में हैं शीश झुकाते ।
बाबा उनका दुःख हर लेते, और भक्तों का कष्ट मिटाते ॥
दर्द मिटे आये आराम, बोलो साईं साईं राम ॥

बाबा हर राजा से बढ़कर, बाबा राज करैं हर दिल पर ।
बाबा जैसा कोई न साधू, बाबा जैसा नहीं कलन्दर ॥
निश दिन करिए उन्हें प्रणाम, बोलो साईं साईं राम ॥

निस दिन साईं के गुण गाओ, मन में सोई जोत जगाओ ।
जब 'मयंक' मनवा घबराये, साईं चरण में शीश झुकाओ ॥
मिट जायेंगे कष्ट तमाम, बोलो साईं साईं राम ॥

साईं नाम बड़ा हितकारी

सबके कानो में रस घोल, साईं साईं साईं बोल ।
जब भी तू अपना मुँह खोल, साईं साईं साईं बोल ।।

साईं नाम बड़ा हितकारी, लेकर देखो है सुखकारी ।
नाम लेत सब दुःख मिट जाते, जानत है ये दुनिया सारी ।।
नाम है ये सबसे अनमोल, साईं साईं साईं बोल ।।

सोचो खोए बिना विवेक, नाम नहीं इस जैसा नेक ।
साईं का बस इक उपदेश, भक्तो सबका मालिक एक ।।
सारे जग में कहता डोल, साईं साईं साईं बोल ।।

इक दिन ऐसा आयेगा, ठाठ धरा रह जायेगा ।
अभी वक्त है साईं शरण, आ वरना पछतायेगा ।।
होगा इक दिन बिस्तर गोल, साईं साईं साईं बोल ।।

दुनिया के रिश्ते सारे, दूर से लगते हैं प्यारे ।
माया साथ न देत 'मयंक', इससे छुटकारा पा रे ।।
जग सारा है ढोल की पोल, साईं साईं साईं बोल ।।

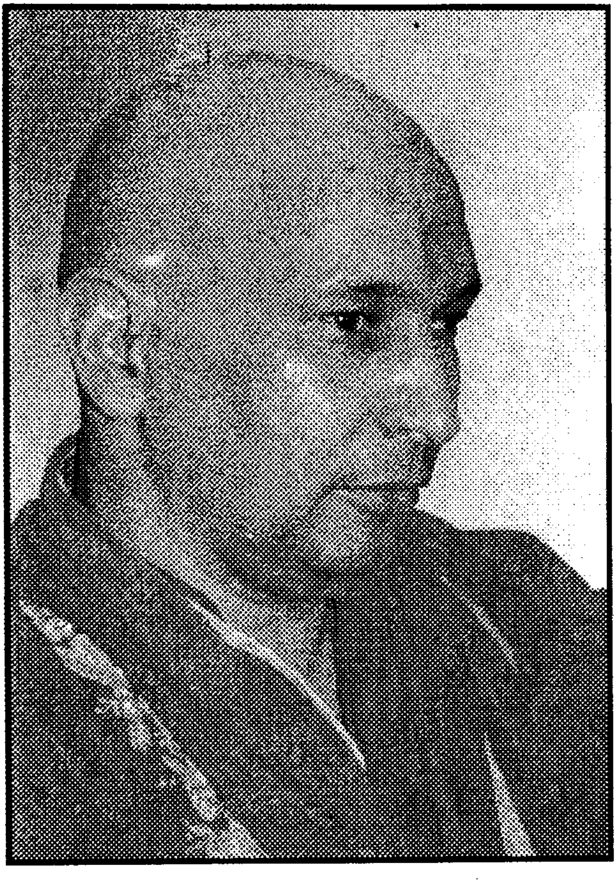

श्रद्धेय गुरू जी

गुरू जी नमन करो स्वीकार

गुरू जी नमन करो स्वीकार ॥

ग़म के सागर में है नैया ,
कोई नहीं है इसका खिवैया ।
तूफ़ानों से इसे बचाकर,
बेड़ा कर दो पार ॥ गुरू जी नमन...॥

शरणागत बनकर आया हूँ,
श्रद्धा के आंसू लाया हूं ।
दुख से भरे जीवन में भर दो,
खुशियों का अम्बार ॥ गुरू जी नमन..॥

धन्य-धन्य भारत की धरती,
जो खुशियों की खेती करती ।
उस धरती पर लिया आपने,
ईश्वर का अवतार ॥ गुरू जी नमन.. ॥

जो भी द्वार तुम्हारे आये,
झोली भर-भर के ले जाये ।
हां ही हां है इस चौखट पर,
कहीं नहीं इंकार ।। गुरू जी नमन..।।

जिसने तुमको जनम दिया है,
दुनिया पर उपकार किया है ।
उस माता के श्री चरणों में,
वंदन बारम्बार ।। गुरू जी नमन..।।

धन्य-धन्य ये भक्त तुम्हारे,
सेवा करते कभी न हारे ।
बिना लोभ लालच ये सबका,
करे 'मयंक' उपकार ।। गुरू जी नमन..।।

जग के स्वामी

गुरू जी तुम हो जग के स्वामी ।।

मैं पापी व्यभिचारी, कैसे द्वार तुम्हारे आऊँ
तुम जैसे सच्चिदानन्द के, कैसे दर्शन पाऊँ
दास तुम्हारा है ये दाता, घोर कुटिल, खल, कामी
गुरू जी तुम हो जग के स्वामी ।।

तुम से कुछ भी नहीं छुपा है, तुम हर मन की जानो
कौन भला है कौन बुरा है, तुम सबको पहचानो
तुम त्रिकालदर्शी ज्ञाता हो, तुम हो अन्तरयामी
गुरू जी तुम हो जग के स्वामी ।।

जोड़े हाथ खड़ा हूं दर पर, पूजा विधि ना जानूं
इक तुम ही उद्धार करोगे, बस तुमको पहचानूं
चरण तुम्हारे मेरी मंजिल, मैं इनका अनुगामी
गुरू जी तुम हो जग के स्वामी ।।

इस दुख के सागर से गुरू जी, मुझको पार उतारो
सबकी तरहा मुझ 'मयंक' के, भी तुम भाग्य सवांरो
तिनका बन बह जाऊंगा, गर बांह न तुमने थामी
गुरू जी तुम हो जग के स्वामी ।।

गुरू जी सुनिए अरज़ हमारी

गुरू जी सुनिए अरज़ हमारी ।।
देव तुल्य हो तुम दाता हो, कलियुग के अवतारी ।
गुरू जी सुनिए अरज़ हमारी ।।

जो कोई द्वार तुम्हारे आता, झोली भर कर जाता,
श्री चरणों में शीश झुकाकर, मनवांछित फल पाता ।।
उसने सब कुछ पाया जिसने, पा ली शरण तुम्हारी,
गुरू जी सुनिए अरज़ हमारी ।।

कृपा पात्र मैं बनूं, कहां मैने ये क़िस्मत पाई,
कैसे तुमसे नाता जोड़ूं, तुम पर्वत मैं राई ।।
धवल चरण कैसे छूऊं, मैं ओढ़ चदरिया कारी,
गुरू जी सुनिए अरज़ हमारी ।।

रहा भटकता अब तक इत उत पास न तुम्हरे आया,
तुमसे रह कर दूर गुरू जी, जीवन व्यर्थ गवांया ।।
क्षमा करो हे साईं हमसे, भूल हो गई भारी,
गुरू जी सुनिए अरज़ हमारी ।।

गुरू की महिमा

गुरू की महिमा अपरम्पार ।
गुरू जी महाभक्त ईश्वर के, संतो के सरदार ।।

हिचकोले खाये सागर में जब जीवन की नैया,
दूर दूर तक पास नहीं हो जब पतवार खिवैया ।।
बन के सहायक निज भक्तों का बेड़ा करते पार,
गुरू की महिमा अपरम्पार ।।

गुरू हैं ब्रह्मा, गुरू हैं विष्णु, गुरू ही हैं शिव शंकर,
गुरू की पूजा ईश की पूजा से भी होती बढ़कर ।।
ईश्वर बनकर गुरू ही करते भक्तों का उद्धार,
गुरू की महिमा अपरम्पार ।।

गुरू गोविन्द खड़े हों दोनो तो मैं गुरू को ध्याऊं,
गुरू ईश्वर से मिलवा देते सोच-सोच हरषाऊं ॥
नमन ईश तक पहुंचेगा जो गुरू करें स्वीकार,
गुरू की महिमा अपरम्पार ॥

गुरू हमारे परोपकारी, हैं जग के रखवाले,
जिनके तेज के आगे लगते, फीके सभी उजाले ॥
उनके आगे चंदा, सूरज मानें आपनी हार,
गुरू की महिमा अपरम्पार ॥

जाति पांति के भेदभाव को माने नहीं गुरू जी,
धर्म के नाम से शिष्यों को पहचाने नहीं गुरू जी ॥
ये 'मयंक' भी श्री चरणों में झुकता बारम्बार,
गुरू की महिमा अपरम्पार ॥

गुरू जी के चरणों में

मेरे अर्पित हैं शत्-शत् प्रणाम, गुरू जी के चरणों में।
मन को मिलता है बस आराम, गुरू जी के चरणों में ॥

गुरु चरणों की महिमा भारी,
हम हैं इन चरणों के पुजारी ।
अपना इच्छित वर पाने को,
झुकते हैं सारे संसारी ॥
मेरे बसते हैं चारों धाम, गुरू जी के चरणों में ।
मेरे अर्पित हैं शत्-शत् प्रणाम, गुरू जी के चरणों में ॥

जब-जब इनको शीश नवाया,
खुद को ऊंचाई पर पाया ।
गम की धूप सताती कैसे,
सर पै था गुरु जी का साया ॥
मैं तो बैठूंगा सुबहो-शाम गुरू जी के चरणों में ।
मेरे अर्पित हैं शत्-शत् प्रणात गुरू जी के चरणों में ॥

जाति-पांति पूछे नहीं कोई,
गुरु को भजे सो गुरु का होई ।
छोटे, बड़े, धनी और निर्धन,
यहां जगाते किस्तम सोई ।।
बस प्यार के बंटते हैं जाम गुरू जी के चरणों में ।
मेरे अर्पित हैं शत्-शत् प्रणाम गुरू जी के चरणों में ।।

आओ भक्तों मत घबराओ,
साथ 'मयंक' के तुम भी आओ ।
गुरू पादुका सर पर रखकर,
नाचो गाओ धूम मचाओ ।।
बन जायेंगे बिगड़े काम गुरू जी के चरणों में ।
मेरे अर्पित हैं शत्-शत् प्रणाम गुरू जी के चरणों में ।।

परिचय : इस भजन के रचयिता श्री के. के. सिंह 'मयंक' हिन्दी और उर्दू के देश के जाने-माने एवं बहुचर्चित कवि एवं शायर हैं। आपने ग़ज़ल, नज़्म, गीत के साथ-साथ भजनों की भी रचना की है जिनको दूरदर्शन, रेडियो तथा लोक गायकों ने महफिलों तथा कैसेटों द्वारा जनमानस तक पहुँचाया है। इस भजनमाला में

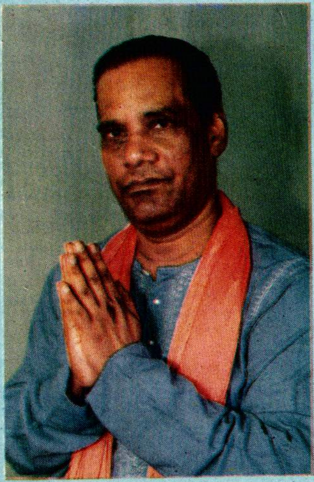

कृष्ण कुमार सिंह मयंक

श्री मयंक ने अपने सभी इष्ट देवी एवं देवताओं जैसे श्री गणेश, श्री कृष्ण, श्रीराम, श्री हनुमान, श्री शिवशंकर, श्री सत्यदेव भगवान, माँ शारदे, श्री साईं राम तथा गुरूजी आदि को समर्पित भजन लिखे हैं। आज के दौर में जहां धर्म के प्रति लोगों की आस्था घट रही है तथा व्यक्ति भौतिकवाद की ओर बढ़कर दुख प्राप्त कर रहा है मुझे विश्वास है कि इस भजनावली के भजन लोगों में धर्म के प्रति आस्था बढ़ाकर सही राहें दिखायेंगे।

मयंक जी के बहुत से भजनों में से चुनकर इस भजनावली के भजन मैने प्रकाशन हेतु संकलित किये हैं। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि आप मेरे इस प्रयास को सराहेंगे ।

श्रीमती सरोज सिंह 'मयंक'